हनुमज्ज्योतिष



हिन्दी
टीका सहित

श्रीः

हनूमज्ज्योतिष

भाषाटीकासमेत



जिसमें-

हनुमान् चरित्र, काकचरित्र, दिवादण्ड, रात्रिदण्डप्रमाण
स्पन्दनचरित्र, रामचरित्रादि विषय हैं

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

संस्करण : मई २०१६, सवंत् २०७३

मूल्य : ५० रुपये मात्र ।

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop: Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi,
Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s. Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013.





भूमिका

यह ग्रन्थ बहुत परिश्रम करके वंगाक्षरोंसे देवनागरीय वर्णोंमें संपादन कर हमने हिन्दी भाषासे अतीव शुद्धताके साथ विभूषित किया है। इस ग्रथमें विद्या, धन, रोजगार, साहित्य, सम्बध, वादविवाद, गंगाप्राप्ति, विदेशगमन. स्वदेश आगमन" इत्यादि प्रश्नसम्बन्धी विचार ऐसे उत्तम प्रकारसे कहे हैं कि एक २ प्रश्नके लिये एक २ चक्र रक्खा है और उन चक्रोंसे ज्योतिर्विदोंको प्रश्नोंके उत्तर ऐसे प्रतीत होते हैं कि, जैसे दर्पणमें मुख। इसलिये यह ग्रन्थ व्यवसायी आदि महाशयोंके बहुत ही लाभदायक होगा विशेष क्या लिखेंगे इस ग्रन्थके फलितोंका ऐसा ढंग रक्खा है कि देखनेसे चित्त प्रसन्न हो जाय इसमें " हनुमान् चरित्र, काकचरित्र. दिवादण्ड, रात्रि-दण्डप्रमाण, स्पन्दनचरित्र, रामचरित्र" एवं ज्योतिषके विचार इस प्रकारसे कहे हैं कि, हिन्दू या मुसलमान आदि सबको लाभदायक होगा, इसलिये ही हमने निज "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालयमें मुद्रित किया है और सविनय। निवेदन कर आशा करता हूँ कि आपलोग इसका अवलोकन कर मेरे परिश्रमको सफल करेंगे। विद्वज्जनकृपाकांक्षी-

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,

"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-मुद्रणयन्त्रालयाध्यक्ष,

कल्याण-बम्बई.

श्रीः

हनूमज्ज्योतिषानुक्रमणिका

इति हनूमज्ज्योतिषानुक्रमणिका समाप्ता

श्रीः

अथ हनूमज्ज्योतिषम्-

भाषाटीकासमेतम्



श्रीरामचन्द्र उवाच

ऋष्यमूकगिरौ रामो हनूमन्तं स्म पृच्छति ।
सूर्यान्तिके पठितं शिष्य तत्सर्वं कथयस्व मे ॥ १ ॥

ऋष्यमूक पर्वतमें श्रीरामचन्द्र हनुमान्‌को बोलते भये कि, तुमने सूर्य्यके निकट जायके क्या विद्या पठन की ? सो कहो ॥ १ ॥

श्रीहनूमानुवाच

सर्वशास्त्रं मया ज्ञातं वेदान्तादि यथाविधि ।
ज्योतिःशास्त्रं सर्वफलं किं वदामि तव प्रभो ॥२॥

हनुमान्‌जी श्रीरामचन्द्रजीसे बोलते भए कि हे प्रभु ! मैं वेदांतादि सर्वशास्त्र विधिपूर्वक पढ आया हूँ, तिनमें ज्योतिषविद्या सर्वफलदायक है, तिनमें कौन शास्त्र प्रकाश करूं ? जो मरजी हो सो कहो ॥ २ ॥

श्रीरामचन्द्र उवाच

अन्यच्छास्त्रं विवादाय पदार्थानां विबोधकम् ।
भविष्यदर्थबोधाय ज्योतिःशास्त्रं वदाधुना ॥३॥

श्रीरामचन्द्रजी हनुमान्‌जीको बोले कि अन्य सब शास्त्र केवल वाद विवादके ही अर्थ हैं और भविष्यता अर्थबोधके निमित्त दीप्तिमान् अर्थात् उजियार ज्योतिषशास्त्र ही है सोई तुम हमसे कहो ॥ ३ ॥

हनूमानुवाच

तेषां वचनमाश्रुत्य हनूमान्निजगाद ह । भविष्य
दर्थबोधाय शृणु यद्रघुनन्दन ॥४॥

श्रीरामचन्द्रजीके वचन श्रवण कर हनुमान्जी भविष्यत् अर्थ ज्ञानके निमित्त, रामचन्द्रसे बोलते भए कि हे प्रभु ! श्रवण कीजिये ॥ ४ ॥

दशकोष्ठं-समालिख्य चक्रं नामयुतं पुनः
आद्य वर्णस्वरो ग्राह्यो भविष्यति सुनिश्चितम्॥५

दश कोठे चक्राकृति करके पुनः नाम लिखने, उस कोठेके मध्य जो शब्द लिखा है तिससे अर्थात् तिसके आदि वर्णसे आदि स्वरसे भविष्यत् जो फल होगा सो अब निश्चय करके जाना जावेगा ॥ ५ ॥

अथ चक्रसंग्रह

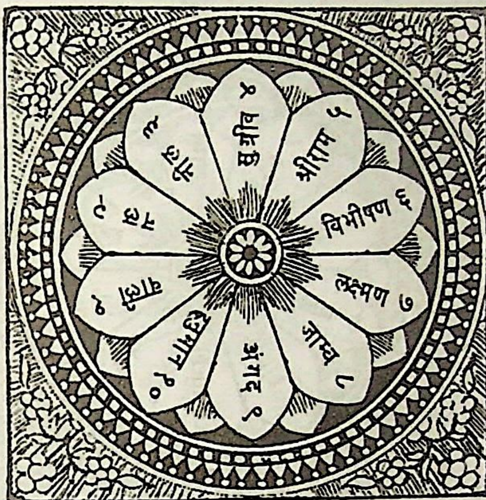
गमनागमनश्चैव कृषिर्व्यापार एव च। गङ्गाप्राप्तिश्च रोगैर्हि मृत्युचिंता तथैव च ॥ सेवासाहित्यवासाश्च तन्त्रीचिंता धनस्य च। मनःकाम तथा रोगो धनोत्पत्तिकरस्तथा ॥ वादो विवादः

सङ्गश्च युद्धं मेलनमेव च । यात्रा प्राप्तिश्च विश्वासस्थानं नष्टनिधिस्तथा ॥ ग्राहको भीतिगर्भौं च चिन्ता बन्धनमेव च। विश्वासविद्यादूताश्च सम्बन्धो राज्यमेवच। सन्तानसञ्चयोद्वाह्य विक्रयप्रणयौ तथा । कुशलं च क्रमेणैषां चक्राण्युक्तानि नामभिः । चक्रकोष्ठेंऽगुलिं स्थाप्य कुर्यादत्र परीक्षणम् ॥ ६ ॥

यथा यात्रा परीक्षा आदि जो चक्र प्रगट दिखाये हैं सोई चक्र प्रति पत्रोंके ऊपर जो नाम लिखा है उस नामके अनुसार उन सबमें जो परीक्षा देनेका मतलब होय तो उस चक्रके कोठेमें अंगुली स्थापन करे। उस नाम अर्थात् कोष्टकके अंकोंके अनुसार फल जानना ॥ ६ ॥

अथ गमनपरीक्षा

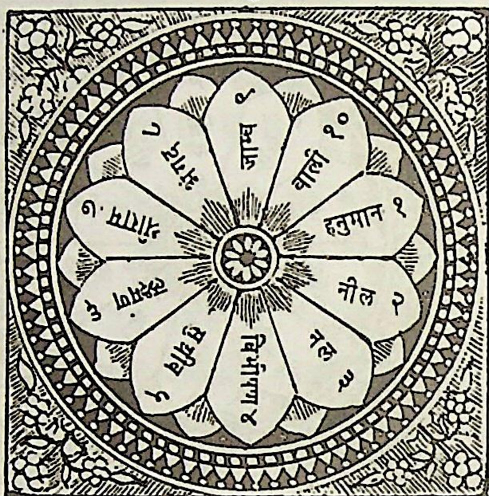
वालिनं नलनीलौ च सुग्रीवं रामचन्द्रकम् । विभीषणं लक्ष्मणं च जांबवन्तं तथांगदम् ॥ हनुमन्तंसमालिख्य यात्रागमनमादिशेत् ॥ १ ॥



यह जो दश नाम चक्रके मध्यमें लिखे हैं जिनकी कहीं गमन करनेकी इच्छा होवे वह इस चक्रमें परीक्षा करनेसे फलाफल मालूम कर सकेंगे ॥ १ ॥

अथ आगमनपरीक्षा

आगमं चिन्तयेदत्र विलम्बं शीघ्रतां तथा। हनूमान् नीलकनलौ विभीषणसुकण्ठकौ॥ लक्ष्मणो रामचन्द्रश्च ह्यंगदो जांबवांस्तथा। वाली चैतेषु वक्ष्यामि क्रमेण गणयेद्बुधः ॥ २ ॥



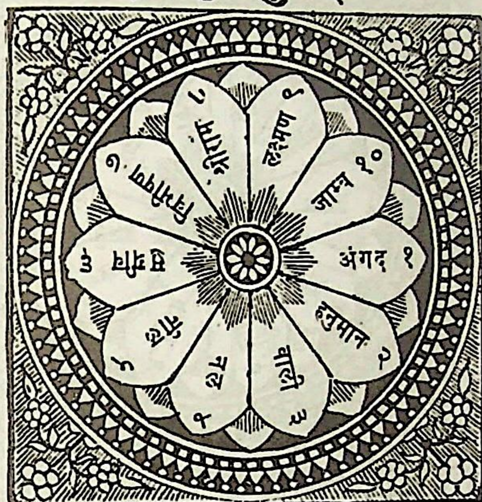
चक्र २.

जो कोई परदेशसे स्वदेश आनेकी परीक्षा करे यानी शीघ्रमें आवेगा या देर होगी इसकी परीक्षा चाहे तो इस चक्रमें मालूम करनेका क्रम जाना जायगा ॥ २ ॥

अथ कृषिकर्मपरीक्षा

कृषिकर्मपरीक्षादि यत्नतश्चिन्तयेद्बुधः । अंगदोहनुमांश्चैव वाली च नलनीलकौ ॥ सुग्रीवो रावणभ्राता श्रीरामो लक्ष्मणस्तथा । जांववांश्च क्रमादेतैः फलं ब्रूयाच्छुभाशुभम् ॥ ३ ॥

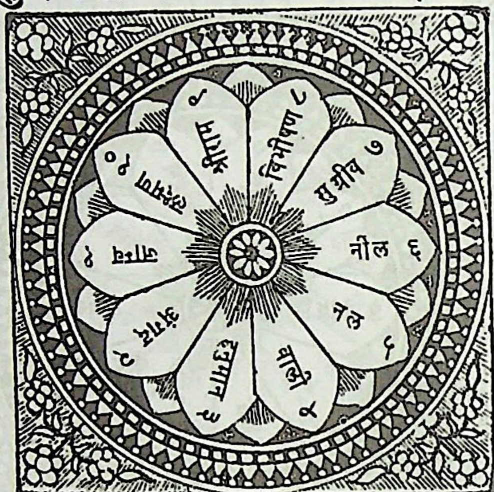
चक्र ३.



जिन लोगोंकी कृषिकर्म करनेकी इच्छा होवे इस चक्रमें देखनेसे शुभाशुभ फलको जानेंगे ॥ ३ ॥

अथ व्यापारपरीक्षा

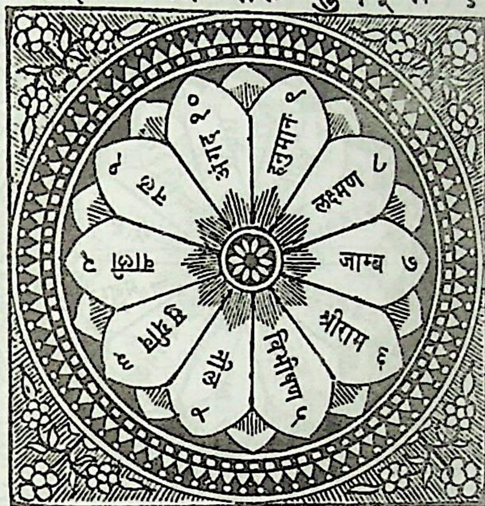
जांबवानंगदश्चैव हनुमान्वालिसंज्ञकः ॥ नलो नीलश्च सुग्रीवो विभीषणनृपात्मजाः ॥ लाभालाभं शुभं दृष्ट्वा यत्नतः परिवर्जयेत् ॥ ४ ॥



जो लोगोंको व्यापार करनेकी इच्छा होवे वे इसके भीतर नामानुसार विचार करके देखें तो शुभाशुभ फलको जान सकेंगे ॥ ४ ॥

अथ गंगा प्राप्तिपरीक्षा

गंगातीरे मृतिंप्राप्तुं यदीच्छंति च मानवाः । नलो वाली सुकण्ठश्च नीलो लंकेश्वरस्तथा ॥ श्रीरामो जांबवान्वीरो लक्ष्मणो हनुमांस्तथा । अंगदश्च विजानीयात् क्रमेणैतैः फलं शुभम् ॥ ५ ॥

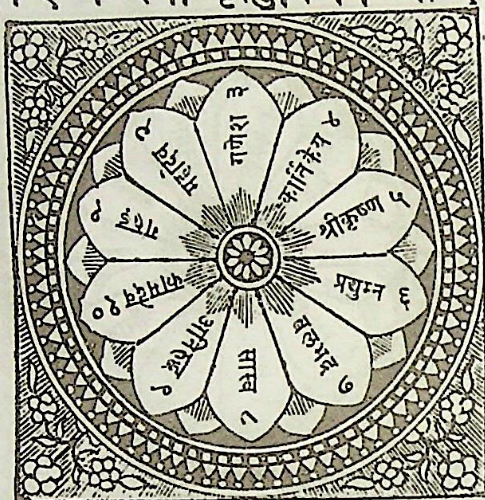


जो लोग गंगातीरमें मृत्यु होनेकी वाञ्छा करके गमन करें सो लोग इस चक्रके नामानुसार गणना करके शुभाशुभ जान सकेंगे ॥ ५ ॥

अथ मृत्युचिंतापरीक्षा

मृत्यु चिन्तापरीक्षायामितस्तच्चिन्तयेद्बुधः । गरुडःशंकरश्चैवगणेशः कार्तिकस्तथा॥श्रीकृष्ण-श्चापि प्रद्युम्नो बलभद्रश्च सांबकः । अनिरुद्धः कामदेव एभ्यः स्यान्मृत्युनिश्चयः ॥ ६ ॥

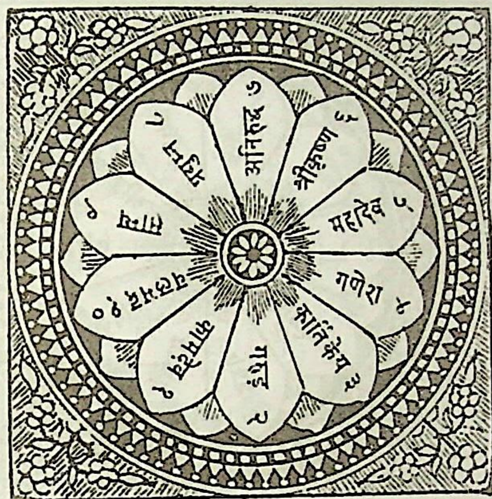
चक्र ६



जो कोई बहुत रोगसे पीडित भया हो सो मृत्युकी वा जीवन पानेकी परीक्षा लेनेका मतलब करे वो इस चक्रमें नामानुरूप अंकानुसारी निश्चय फल जान लेना ॥६॥

अथ देवेष्टपरीक्षा

देवोऽयं परितुष्टःस्याद्यदि पृच्छंति मानवाः । कामश्च गरुडश्चैव कार्तिकेयो गणेश्वरः ॥ महादेवश्च श्रीकृष्णोऽनिरुद्धस्तत्पिता तथा । साम्बश्चबलभद्रश्चफलमेभिरुदाहरेत् ॥ ७ ॥

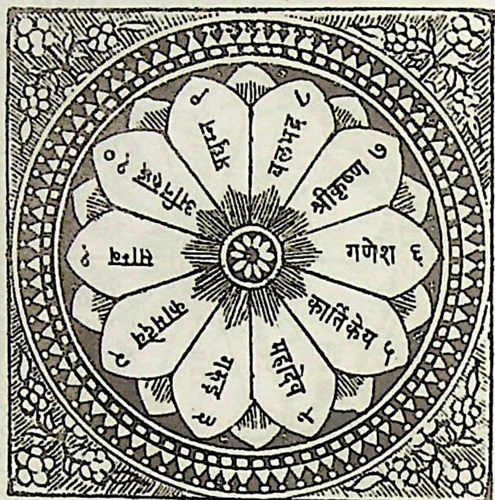


चक्र ७.

जो कोई देवसेवा करनेकी अभिलाषा करे सो इस चक्रमें परीक्षा कर नामानुसार शुभाशुभ फल जान सकते हैं ॥ ७ ॥

अथ साहित्यपरीक्षा।

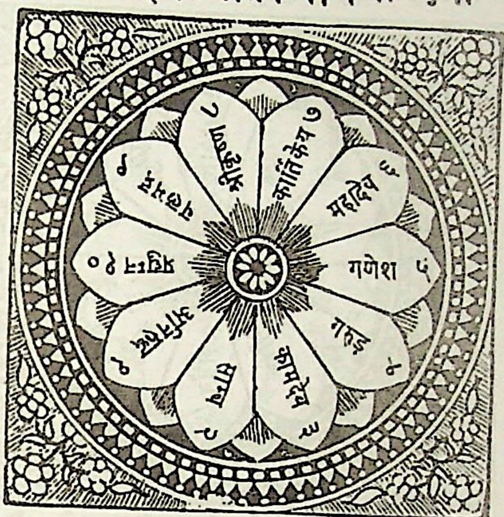
सांबःकामश्च गरुडो महादेवश्च कार्तिकः । गणेश्वरश्च श्रीकृष्णो बलः प्रद्युम्न एव च ॥ अनिरुद्धः क्रमादेतैः फलं ब्रूयाच्छुभाशुभम् ॥ ८ ॥



जो कोई साहित्यकी इच्छा करें सो इस चक्रमें हस्त संस्थापन करके नामानुरूप अंकानुसार शुभाशुभ फल मालूम कर सकते हैं ॥ ८ ॥

अथ वासनिरूपणपरीक्षा

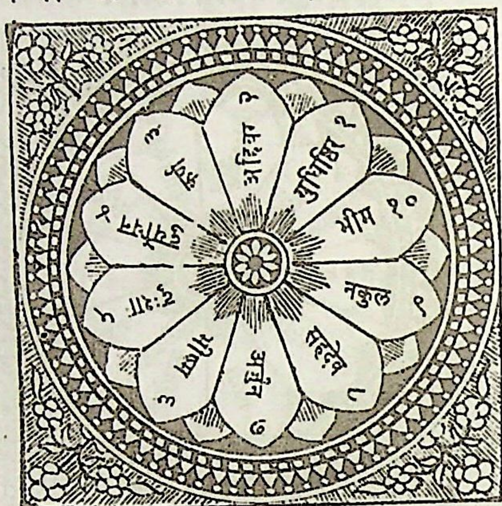
अनिरुद्धश्च सांबश्च कामो गरुड एव च। गणेश्वरो महादेवः कार्तिकः कृष्ण एव च ॥ बलभद्रश्च प्रद्युम्नो जानीयात् स्थितिकर्मणि ॥ ९ ॥



जो किसी मनुष्यकी स्थानके वास करनेकी इच्छा होय तो इस चक्रमें हस्त स्थापन करके नामानुरूप अंकानुसार शुभाशुभ जान सकते हैं ॥ ९ ॥

अथ मंत्रिपरीक्षा

युधिष्ठिरश्चाहिवरः कार्तिकेयसुयोधनौ। दुःशासनश्च गांगेयो ह्यर्जुनः सहदेवकः ॥ नकुलो भीमसेनश्च क्रमान्मन्त्रिविचारणम् ॥ १० ॥

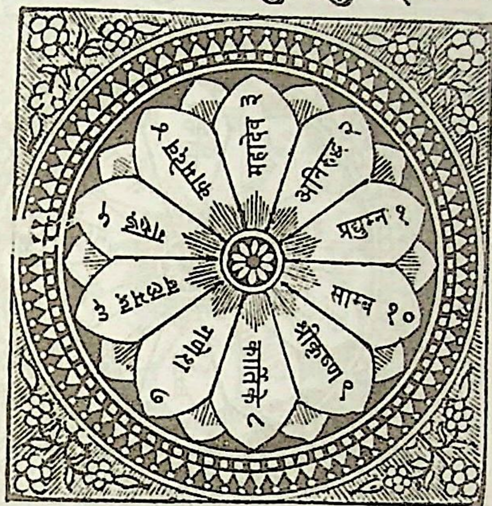


चक्र १०.

जो पुरुष मंत्री होनेकी इच्छा करे सो पुरुष इस चक्रमें गणना करके नामानुरूप अंकानुसार फलको पावेगा ॥ १० ॥

अथ धनचिन्तापरीक्षा

प्रद्युम्नो ह्यनिरुद्धश्च महादेवो रतीश्वरः । गरुडो बलभद्रश्च गणेशः कार्तिकस्तथा ॥ श्रीकृष्ण-साम्बौ कथितौ जानीयाच्च शुभाशुभम् ॥ ११ ॥

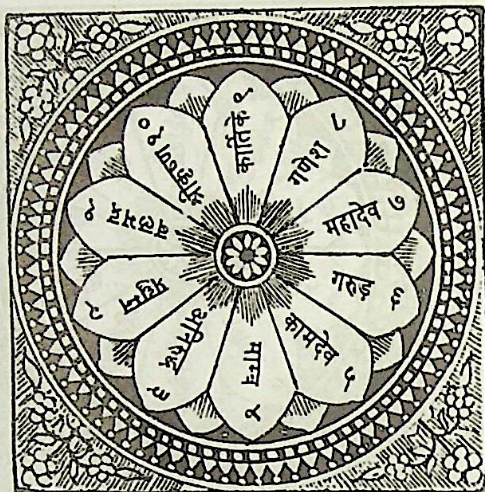


चक्र १९.

जो मनुष्य धनचिन्ता करके परीक्षा चाहे सो इस चक्रमें हस्तस्थापन करके नामानुरूप अंकानुसार शुभाशुभ फलको पावेगा ॥ ११ ॥

अथ मनःकामपरीक्षा

आदौ बलश्च प्रद्युम्नोऽनिरुद्धः साम्ब एव च । कामदेवोऽथ गरुडो महादेवगणेश्वरौ ॥ कार्तिकेयश्च श्रीकृष्णो जानीयाच्च शुभाशुभम् ॥ १२ ॥

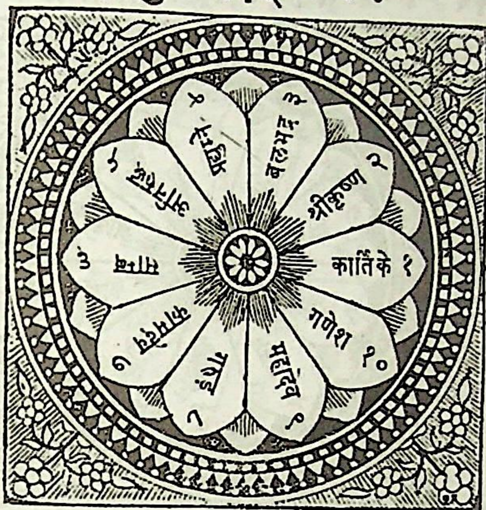


चक्र ९.

जो कोई मनुष्य मनमें इच्छा करके परीक्षा चाहे तो इस चक्रके मध्यमें हस्तस्थापन करके नामानुरूप अंकानुसार फलाफल जान सकेगा ॥ १२ ॥

अथ रोगपरीक्षा

कार्तिकेयश्च श्रीकृष्णो बलःप्रद्युम्न एव च। अनिरुद्धश्च साम्बश्च कामदेवः खगेश्वरः ॥ महादेवो गणेशश्च क्रमपूर्वं शुभं वदेत् ॥ १३

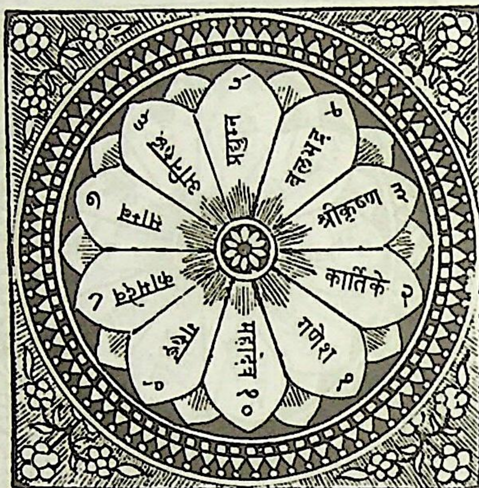


चक्र १३

जो कोई लोग रोगचिन्ताकी परीक्षा चाहें सो इस चक्रमें हस्त स्थापन करके नामानुरूप अंकानुसार शुभाशुभ फल पावेंगे ॥ १३ ॥

अथ धनागमपरीक्षा

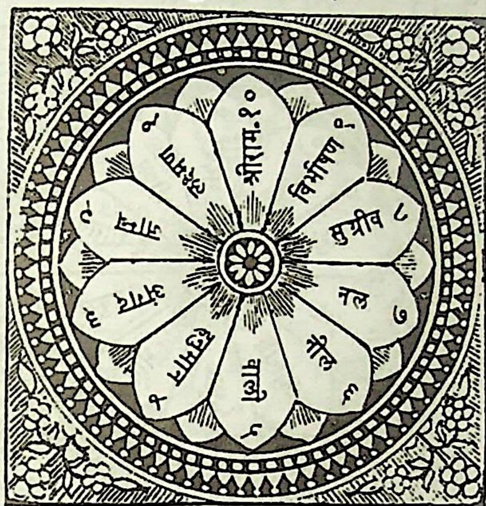
गणेशः कार्तिकेयश्च श्रीकृष्णो बलभद्रकः । प्रद्यु-म्नो ह्यनिरुद्धश्च साम्बो वै मीनकेतनः । गरुडश्च महादेवः क्रमात्सर्वं विचारयेत् ॥ १४ ॥



जो लोग रोजगारकी मनसा करके परीक्षा करना चाहें सो इस चक्रमें हस्त स्थापन करके नामानुरूप अंकानुसार फलाफल मालूम कर सकेंगे ॥ १४ ॥

अथ वादपरीक्षा

लक्ष्मणो जांबवानेव ह्यंगदोहनुमांस्तथा । वाली नीलो नलश्चैव सुकण्ठकविभीषणौ ॥ रामचंद्रः क्रमादेभिर्जानीयाद्वै शुभं फलम् ॥ १५ ॥

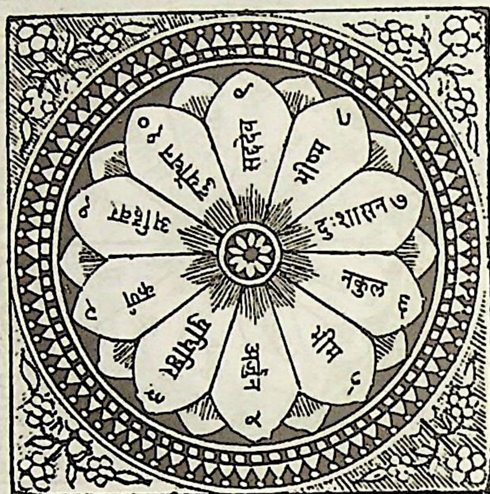


चक्र १५

जो मनुष्य कुछ अपवादग्रस्त होके शंकित होय तो इस चक्रमें हस्त स्थापन करके यथारीति देखकर शुभाशुभ फलको जाने ॥ १५ ॥

अथ विवादपरीक्षा

अहीश्वरश्च राघयो धर्मराजोऽर्जुनस्तथा। भीमश्च नकुलश्चैव तथा दुःशासनःस्मृतः॥ गांगेयः सहदेवश्च तथा दुर्योधनो मतः। शुभाशुभं फलं तेषां क्रमपूर्वं विचारयेत्॥ १६॥

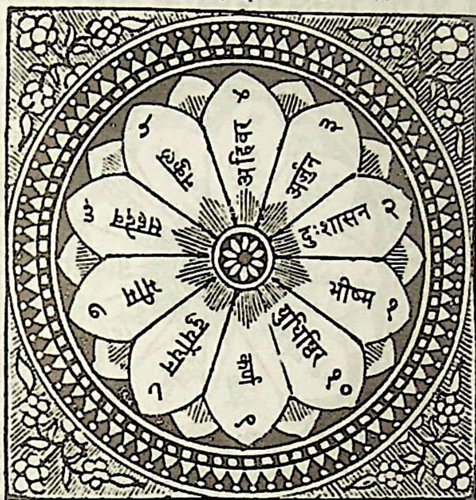


चक्र १६.

जो पुरुष किसी प्रकारके वाद विवादमें पडके उसकी निवृत्ति मालूम करना चाहेगा वह पुरुष इस चक्रमें हस्त स्थापन करनेसे नामानुसार अंकानुरूप फलाफलको पावेगा॥ १६॥

अथ सङ्गपरीक्षा

गङ्गापुत्रश्च दुशासनोऽर्जुनोऽहिवरस्तथा । नकुलः सहदेवश्च भीमो दुर्योधनस्तथा ॥ कर्णो युधिष्ठिरश्चैव क्रमपूर्वं विचारयेत् ॥ १७ ॥



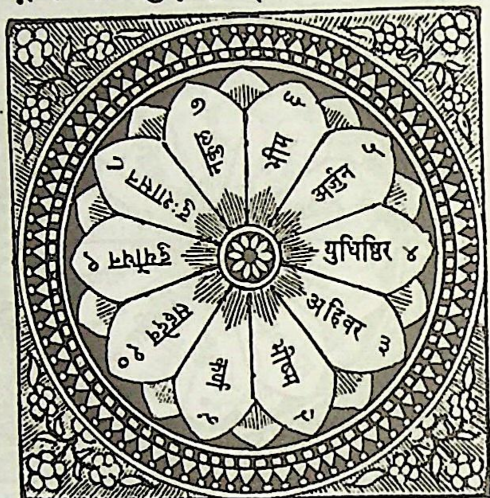
चक्र १८.

जो कोई किसी आदमीको साथ लिया चाहे तो इस चक्रमें हस्तस्थापन करके नामानुरूप अंकानुसार फल जाने ॥ १७ ॥

अथ युद्धपरीक्षा

कर्णो गङ्गाकुमारोप्यहिवरश्च युधिष्ठिरः। अर्जुनो भीमसेनो नकुलो दुःशासनस्तथा। दुर्योधन सहदेव एभिः फलमुदाहरेत् ॥ १८ ॥

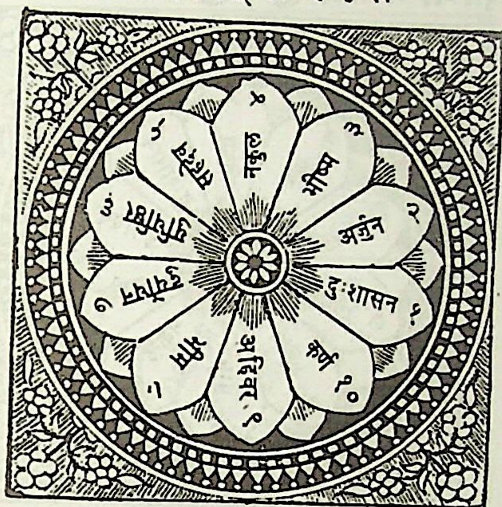
चक्र १८.



जो वीर पुरुष युद्ध करनेकी इच्छा करे तो इस चक्रमें हस्त स्थापन करके नामानुरूप अंकानुसार शुभाशुभ फलको प्राप्त होवे ॥ १८ ॥

अथ मेलनपरीक्षा

दुःशासनो ह्यर्जुनश्च गांगेयो नकुलस्तथा । सहदेवो धर्मराजो दुर्योधनवृकोदरौ ॥ अहीश्वरस्तथा कर्णः क्रमादेतैर्विचारयेत् ॥ १९ ॥



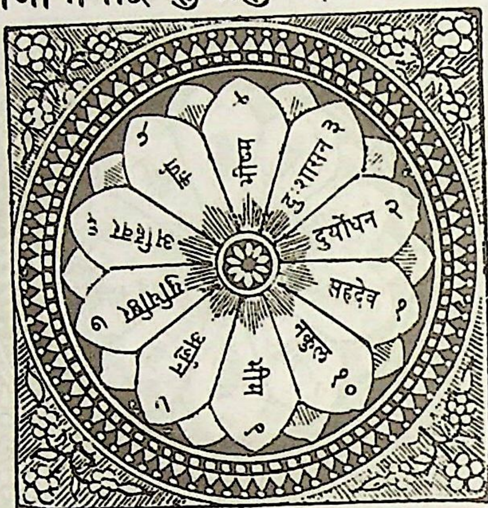
चक्र १४

जो लोग किसी आदमीके साथ मिलन करनेकी इच्छा करें सो इस चक्रमें देखनेसे नामानुरूप अंकानुसार फलको ज्ञात करें ॥ १९ ॥

अथ याञ्चापरीक्षा

सहदेवो धार्तराष्ट्रो दुःशासनसरीज्जनुः कर्ण-
श्चाहि वरो धर्मः सव्यसाची वृकोदरः ॥ नकुलश्च
क्रमादेतैर्जानीयाद्दै शुभाशुभम् ॥ २० ॥

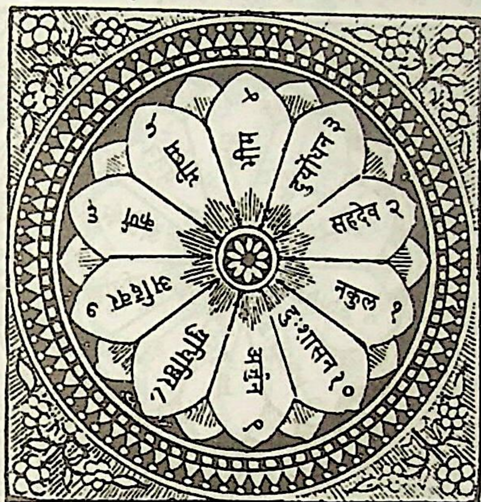
चक्र १०.



जो कोई लोग किसी लोगोंके पास कुछ मांगनेकी इच्छा करें तो पहिले चक्रमें हस्त स्थापन करके नामानुरूप अंकानुसार फलाफल ज्ञात करें ॥ २० ॥

अथ प्राप्तिपरीक्षा

नकुलः सहदेवश्चदुर्योधनवृकोदरौ। गंगापुत्रः कर्ण देवोऽहिधर्मोऽर्जुन एव च ॥ दुःशासनश्च दशभि रेतत्सर्वमुदाहरेत्ः॥ २१ ॥

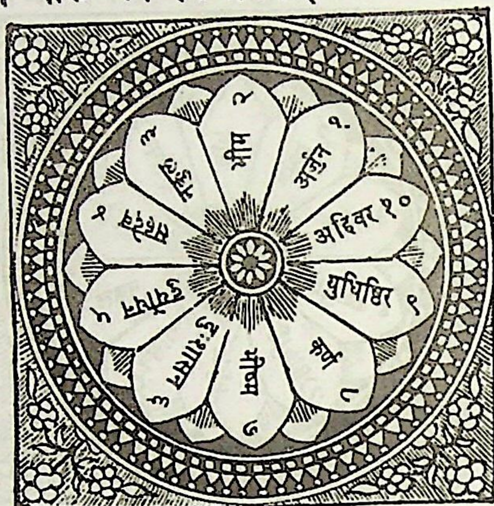


चक्र २१.

जो लोग कुछ पानेकी इच्छा करें तो इस चक्रमें करप्रदान करके नामानुरूप अंकानुसार फलाफलको ज्ञात करें॥ २१ ॥

अथ पीछे पडनेकी परीक्षा।

अर्जुनो भीमसेनश्च यमौ दुर्योधनस्तथा। दुःशासनश्च गांगेयराधेयो च युधिष्ठिरः ॥ अहीश्वरः क्रमादेतः फलं चक्रे विचारयेत् ॥ २२ ॥



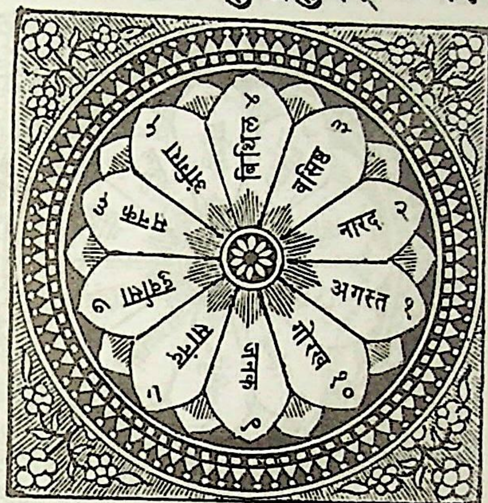
चक्र २९

जो लोगोंके मनमें सन्देह हो कि कोई पीछे पडा है तो इस चक्रमें हस्त स्थापन करके नामानुसार अंकानुरूप फलाफलको ज्ञात करें ॥ २२ ॥

अथ स्वस्थानपरीक्षा

अगस्त्यो नारदश्चैव वसिष्ठो बिथिलस्तथा । अङ्गिराः सनको दुर्वासाः सानन्दक एव च ॥ जनको गोरखश्चैव जानीयात्तैः शुभाशुभम् ॥ २३ ॥

चक्र १३.

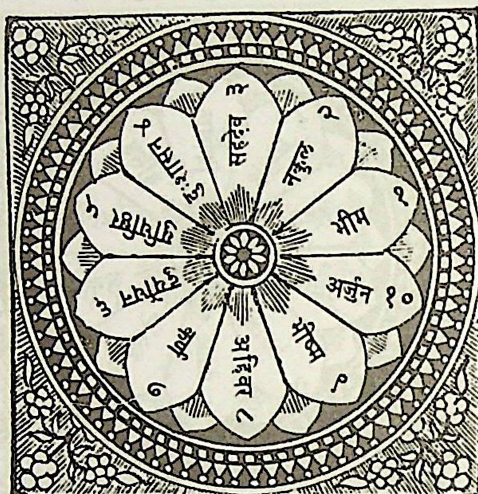


जो लोग स्वस्थान जाननेकी इच्छा करे सो इस चक्रके मध्य करप्रदान करके नामानुरूप अंकानुसार फलाफलको जानें ॥ २३ ॥

अथ नष्टद्रव्यपरीक्षा

भीमश्च माद्रीतनयौ दुःशासनयुधिष्ठिरौ। दुर्यो-धनश्च राधेयोऽहीश्वरश्च सरिज्जनुः ॥ सव्यसाची च दशमःक्रमात्सर्वं फलंवदेत् ॥ २४ ॥

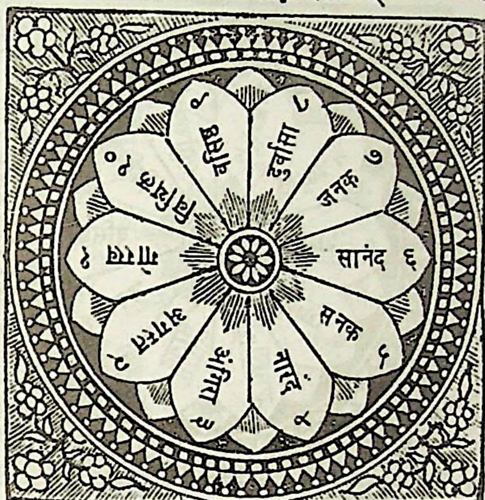
चक्र २५.



जो कोई नष्टद्रव्यके शुभाशुभ फल मालूम करने की इच्छा करें सो इस चक्रमें करप्रदान करके नामानुरूप अंकानुरूप फलको प्राप्त करें ॥ २४ ॥

अथ ग्राहकपरीक्षा

गोरखश्चाप्यगस्त्यश्च ह्यंगिरा नारदस्तथा। सनकश्चाथ सानन्दो जनको दुर्वासकस्तथा ॥ वसिष्ठो बिथिलादत्तः क्रमात्सर्वं वदेत्फलम् ॥ २८ ॥



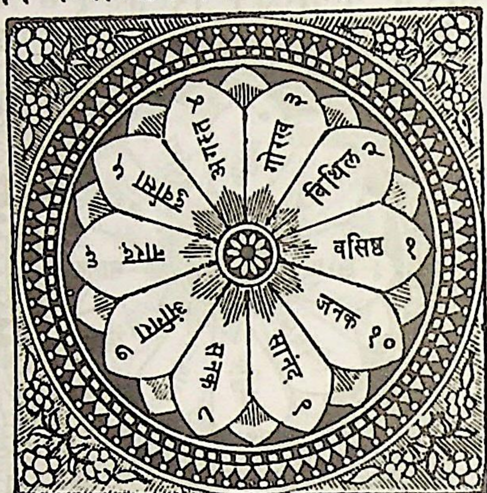
चक्र १९

जो लोग किसी मनुष्यसे ग्राहकप्रार्थना अर्थात् कुछ लेनेकी इच्छा करें सो इस चक्रमें परीक्षा करके देखें तो नामानुरूप अंकानुसार फलाफल ज्ञात होवें ॥ २५ ॥

अथ भीतिपरीक्षा

वसिष्ठो बिथिलश्चैव गोरखोऽगस्त्यकस्तथा । दुर्वासा नारदश्चैव ह्यंगिराः सनकस्तथा॥सानंदो जनकश्चैव क्रमात्सर्वं विचारयेत् ॥ २६ ॥

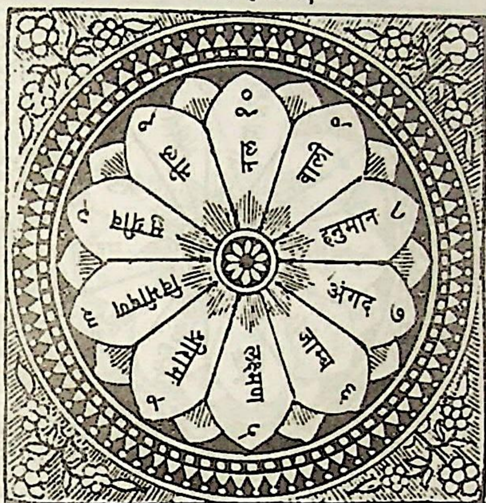
चक्र २६



जो लोग भय खाय इस चक्रमें परीक्षा चाहें सो इस चक्रमें हस्त स्थापन करके नामानुरूप अंकानुसार फलाफल जानें ॥ २६ ॥

अथ गर्भपरीक्षा

नीलसुग्रीवलंकेशास्ततः श्रीरामलक्ष्मणौ। जाम्बवानङ्गदश्चैव हनूमांश्च तथाऽष्टमः ॥ वाली नलः क्रमादेतैर्दशभिः फलमादिशेत् ॥ २७ ॥

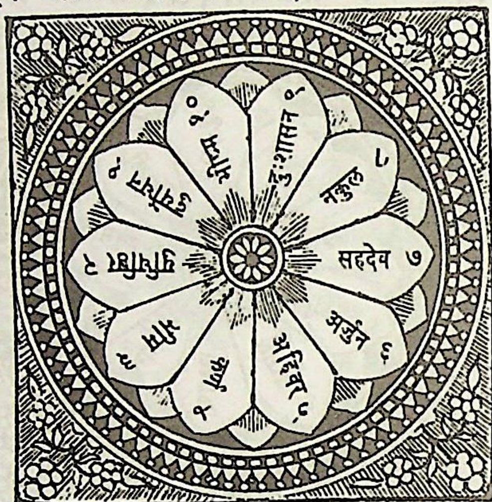


चक्र २७.

जो लोग गर्भचिन्ता करके परीक्षा चाहे तो इस चक्रमें हस्त स्थापन करके नामानुरूप अंकानुसार फलाफल जानें ॥ २७ ॥

अथ चिन्तापरीक्षा

दुर्योधनोऽजातशत्रुर्भीमो कर्णः फणीश्वरः । अर्जुनःसहदेवो नकुलो दुःशासनस्तथा॥गंगापुत्रो यथापूर्वं फलमेतैर्विचारयेत् ॥ २८ ॥

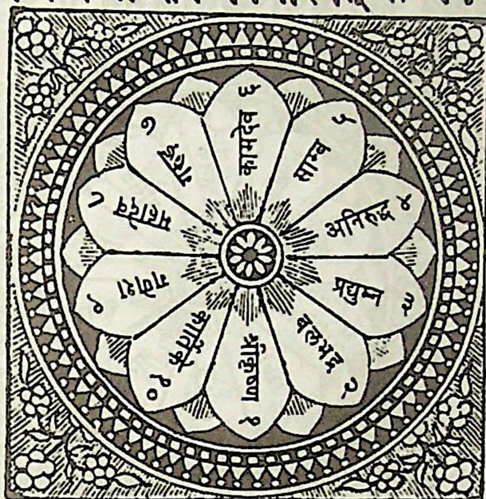


चक्र २८.

जो लोग चिन्तावश होके परीक्षा चाहैं तो इस चक्रमें हस्तस्थापन करके नामानुरूप अंकानुसार फलाफल जानें ॥ २८ ॥

अथ बन्धनपरीक्षा

श्रीकृष्णो बलभद्रश्च प्रद्युम्नश्चानिरुद्धकः । सांबश्च कामदेवश्च गरुडः शंकरस्तथा ॥ गणेशः कार्तिकेयश्च क्रमात्सर्वं विचारयेत् ॥ २९ ॥

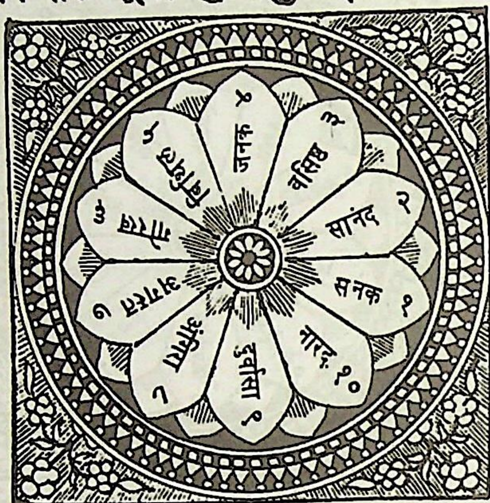


चक्र १९.

जो कोई लोग विपद्ग्रस्त होके बन्दीखानोंसे मुक्त होनेकी परीक्षा करनी चाहे तो इस चक्रमें हस्त स्थापन करके नामानुरूप अंकानुसार फलाफलको जाने ॥२९॥

अथ विश्वासपरीक्षा

तादौ सनकसानन्दौ वसिष्ठजनकौ तथा । विथि-
लो गोरखश्चैव ह्यगस्त्यांगिरसौ तथा ॥ दुर्वासा
नारदश्चैव फलं ब्रूयाच्छुभाशुभम् ॥ ३० ॥

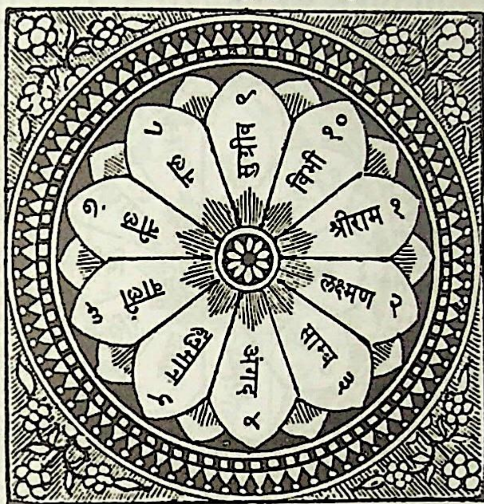


चक्र ३०.

जो लोग किसी कामके वास्ते किसीको विश्वास कर-
नेकी परीक्षा चाहें सो इस चक्रमें हस्तस्थापनकरके नामा-
नुरूप अंकानुसार फलाफलको ज्ञात कर लेवें ॥ ३० ॥

अथ विद्यापरीक्षा

श्रीरामो लक्ष्मणश्चैव जाम्बवानंगदस्तथा । हनुमद्वालिनौ नीलो नलः सुग्रीवकस्तथा ॥ विभीषणः क्रमादेतैः फलं सर्वमुदाहरेत् ॥ ३१ ॥

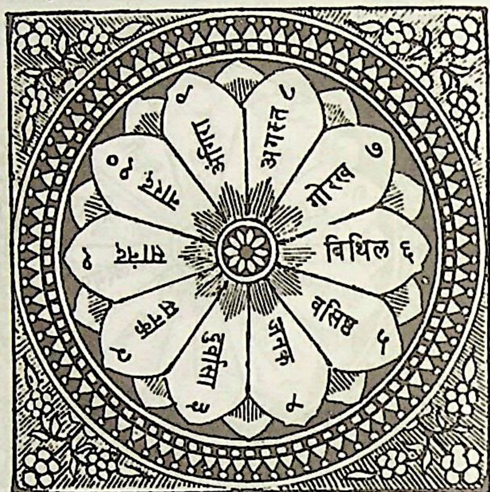


चक्र ३१.

जो मनुष्य विद्या चिन्ता करके परीक्षा करनी चाहे, सो इस चक्रमें कर स्थापन करके देखे तो उसे नामानुरूप अंकानुसार फलाफल ज्ञात होगा ॥ ३१ ॥

अथ दूतपरीक्षा

सानन्दः सनकश्चैव दुर्वासा जनकस्तथा । वसिष्ठो विथिलश्चैव गोरखोऽगस्त्य एव च ॥ अंगिरा नारदश्चैव क्रमादेतैर्विचारयेत् ॥ ३२ ॥

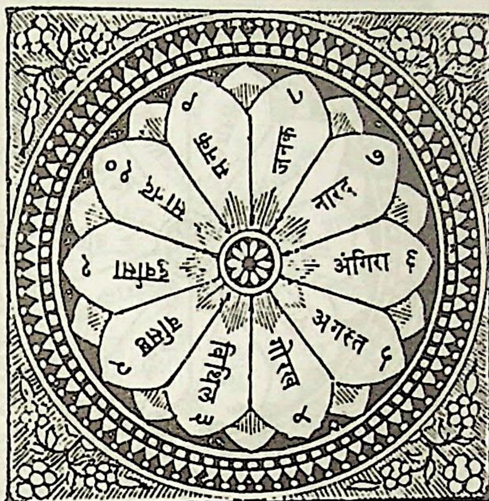


चक्र ३२.

जो कोई लोग दूत याने गोइदा विश्वासी राखनेकी परीक्षा चाहें तो इस चक्रमें हस्त स्थापन करके नामानुरूप अंकानुसार फलाफलको प्राप्त कर लेवें ॥ ३२ ॥

अथ सम्बन्धपरीक्षा

दुर्वासाश्च वसिष्ठश्च बिथिलो गोरखस्तथा ॥ अगस्त्यश्चांगिराश्चैव नारदो जनकस्तथा ॥ ततः सनकसानन्दौ क्रमात्सर्वं विचारयेत् ॥ ३ ॥

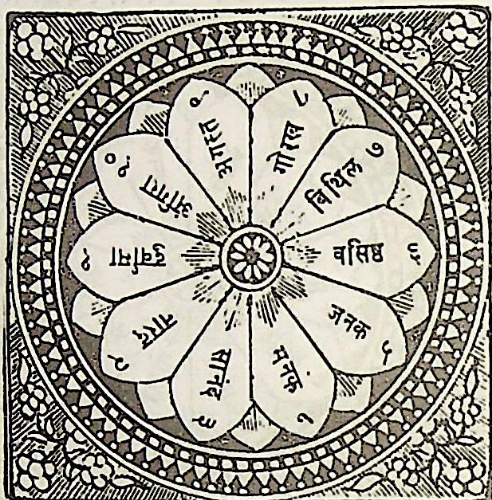


चक्र ३३.

जो कोई मनुष्य सम्बन्ध करनेकी परीक्षा चाहे तो इस चक्रमें हस्त प्रदान करके नामानुरूप अंकानुसार फलाफलको विचार लेवे ॥ ३३ ॥

अथ राज्यपरीक्षा

दुर्वासा नारदश्चैव सानन्दः सनकस्तथा।जनकश्च वसिष्ठश्च बिथिलो गोरखस्तथा ॥ अगस्त्यश्चांगिराश्चैव यथोक्तफलमादिशेत् ॥ ३४ ॥

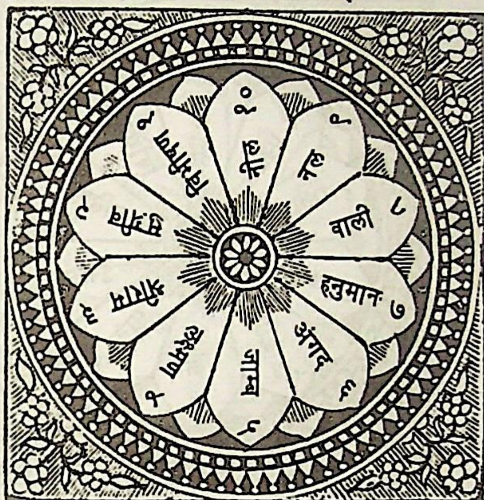


चक्र ३९.

जिन किसी लोगोंको राज्य लेना तथा अधिकार पानेकी परीक्षा कर लेनी हो तो इस चक्रमें करस्थापन करके नामानुरूप अंकानुसार फलाफलको प्राप्त कर लेवें।

अथ सन्तानपरीक्षा

विभीषणश्च सुग्रीवः श्रीरामो लक्ष्मणस्तथा । जांबवानंगदश्चैव हनूमद्वालिनौ नलः॥नील एभिः क्रमाद्ब्रूयाद्विचार्यहि फलाफलम् ॥ ३६ ॥

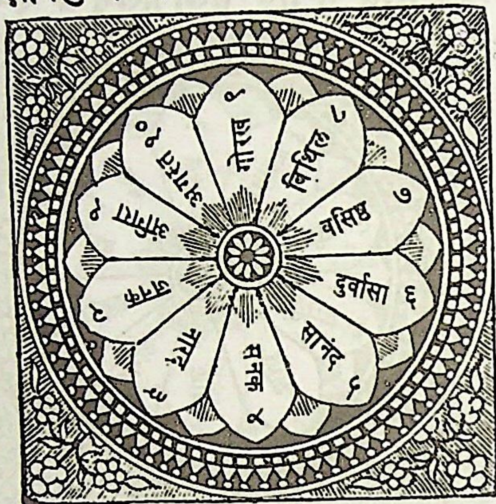


कोई मनुष्य सन्तानकी चिंता करके परीक्षा करनी चाहे तो इस चक्रमें करप्रदान करके नामानुरूप अंकानुसार फलाफल जान लेवे ॥ ३५ ॥

अथ सञ्चयपरीक्षा

अंगिरा जनकश्चैव नारदः सनकस्तथा ॥ सानन्दोऽत्रिसुतश्चैव वसिष्ठो बिथिलस्तथा॥गोरखोऽगस्त्य एतैस्तु क्रमात्सर्वं विचारयेत् ॥ ३६ ॥

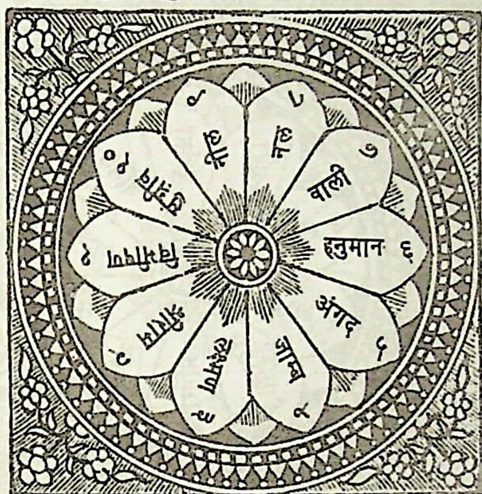
चक्र ३९.



जो मनुष्य कुछ द्रव्य वा अन्य वस्तुसञ्चयकी वाञ्छा करके परीक्षा चाहे तो इस चक्रमें करप्रदान करनेसे नामानुरूप अंकानुसार फलाफल ज्ञात होता है ॥३६॥

अथ विवाहपरीक्षा

विभीषणो रामचन्द्रो लक्ष्मणो जांबवांस्तथा ॥ अंगदो हनुमान्वाली नलनीलसुकंठकाः॥एतैश्च-क्रगतैः सर्वं शुभाशुभफलं वदेत् ॥ ३७ ॥

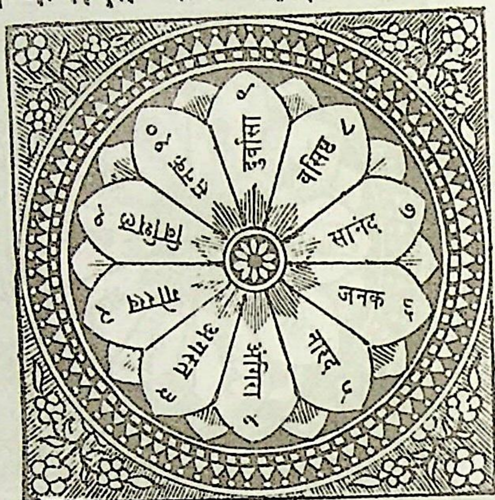


चक्र ३७.

जो लोग विवाहकी मनसा करके परीक्षा करनी चाहें तो इस चक्रमें करभदान नामानुरूप अंकानुसार फलाफलको निश्चय कर लेवें ॥ ३७ ॥

अथ विक्रयपरीक्षा

मिथिलो गोरखश्चैव ह्यगस्त्यांगिरसौ तथा॥नारदो जनकश्चैव सानन्दस्तु वसिष्ठकः ॥ दुर्वासाः सनकश्चैव क्रमादेतैः फलं वदेत् ॥ ३८ ॥

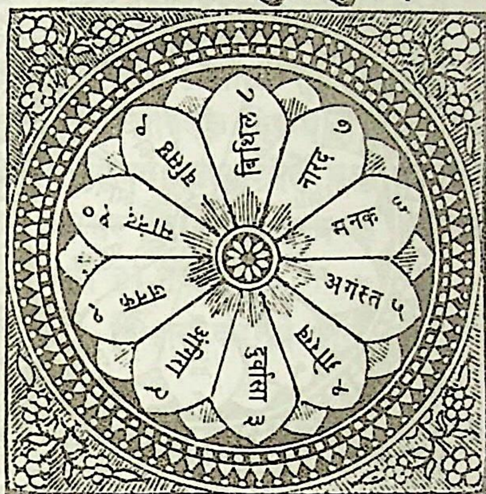


चक्र २९.

जो लोग कुछ विक्रयकी मनसा करके परीक्षा चाहें तो इस चक्रमें करप्रदान करके नामानुरूप अंकानुसार फलाफलको जान सकेंगे ॥ ३८ ॥

अथ प्रणयपरीक्षा

जनको ह्यंगिराश्चैव दुर्वासा गोरखस्तथा ॥ अगस्त्यः सनकश्चैव नारदो बिथिलस्तथा ॥ तथा वसिष्ठसानन्दौ जानीयाच्च शुभाशुभम् ॥ ३९ ॥

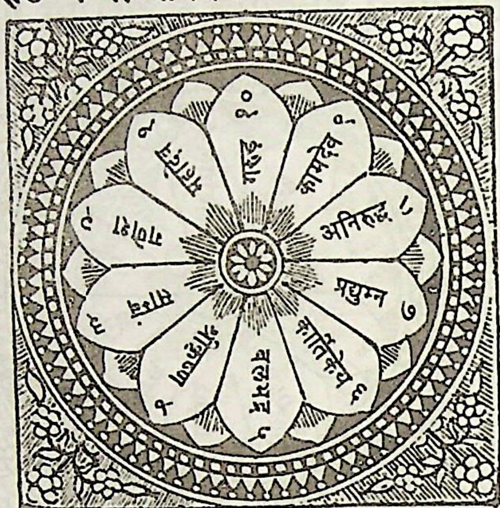


जो कोई किसीसे प्रणय करनेका इच्छा करके परीक्षा चाहे तो इस चक्रमें करप्रदान करके नामानुसार अंकानुरूप फलाफलको जान सकेंगे ॥ ३९ ॥

अथ कुशलपरीक्षा

महादेवो गणेशश्च साम्बः श्रीकृष्ण एव च । बलभद्रः कार्तिकेयः प्रद्युम्नस्तत्सुतस्तथा ॥ कामदेवश्च गरुडः क्रमात्सर्वं विचारयेत् ॥ ४० ॥

चक्र ४०



जो कोई मनुष्य कुशल मनसा करके परीक्षा चाहे तो इस चक्रमें करप्रदान करके नामानुरूप अंकानुसार फलाफलको जान सकेंगे ॥ ४० ॥

इति चक्रं सम्पूर्णम्

यथा गोरक्षकथनम्

ग्राहको विक्रयश्चैव संगः सम्बन्धकस्तथा ॥
विश्वासः प्रणयश्चैव दूतो राज्यं च सञ्चयः ॥
स्वस्थानं च क्रमेणैवं फलानि कथितानि ते ॥१॥

गोरखनाथवचन

१ जो ग्राहक इच्छा करता है सो न होगा।
२ यह वस्तु कभी शेषतक विक्रय न होगी।
३ इस बातमें मित्रता न करनेसे भला होगा।
४ बस्तीसे उत्तर पश्चिममें सम्बन्ध करनेकी बात होती है सो हो सकेगी।
५ इस पुरुषसे विश्वास करनेमें पीछे रक्षा पावोगे. भला होगा।
६ प्रणय (नम्रता) करनेपर भी बहुत कष्ट होंगे।
७ उस जगह दूत पठानेसे जल्दी कार्य सिद्ध होगा।
८ इस राज्यमें दैवदोषसे उत्पात होगा।
९ संचयमें बडा कष्ट है पर भला होगा,चिन्ता नहीं करो।
१० इस अपनी जगह छोडनेसे निश्चय उत्पात उठेगा।

यथा श्रीरामचन्द्रकथनम्

विद्याविवाहसन्तानगर्भाश्च गमनानि च॥ गंगा-
प्राप्तिर्गतश्चैव कृषिकर्म तथैवच ॥ वाणिज्यमपवा-
दश्च एतच्चिन्त्यं शुभाशुभम् ॥ २ ॥

श्रीरामचन्द्रवचन

१ विद्या पढना बड़ा कठिन है, साधन करनेसे कुछ होगा। २ विवाह विलम्बसे वस्तीके दक्षिण तरफ जलपारमें होगा।

३ सुतकामना बहुत कष्टसे कदाचित् सिद्ध होगी।
४ इस गर्भमें पुत्र भला पैदा होगा, निश्चय जानो।
५ तुम दक्षिण दिशामें गमन करनेकी इच्छा करते हो, अभी नहीं गमन होगा।

६ तुम्हारी गंगाप्राप्ति कामना निश्चय सिद्ध होगी।
७ वह मनुष्य दक्षिण दिशामें गया है आनेमें देर है।
८ कृषिकर्म करो मगर पानीका कष्ट है।

९ व्यापार अच्छा न होगा, मूल सहित हानि होगी।
१० इस आफतसे देरीसे मुक्त होवेगा।

लक्ष्मणकथनम्

अपवादोद्वाहविद्याः सन्तानं गर्भ एव च। गमनागमने चैव गंगाप्राप्तिस्तथैव च ॥ कृषिकर्म च वाणिज्यं जानीयाच्छुभलक्षणम् ॥ ३ ॥

श्रीलक्ष्मणवचन

१ अपवादकष्ट जल्दी दूर होगा।
२ विवाह घरके पूर्व अंश होगा कुछ देरी है।
३ विद्या पाठ करनेसे जल्दी विद्या मिलेगी।
४ कुछ दिन विलंबसे बहुत पुत्र लाभ होगा।
५ गर्भमें भाग्यवान पुत्र जन्मेगा निश्चय जानो।
६ वो जीव पूर्वदक्षिण अंशमें गमन करता है वहां कुशल मंगल होगा।
७ वह पूर्व तरफ आनेकी इच्छा करता है सो भला नहीं जाना जाता है।

८ तुम्हारी गंगाप्राप्तिकी इष्टकामना सफल होगी ।
९ कृषिकर्म करो, बहुत लाभ होगा निश्चय करोगे ।
१० व्यापार करनेसे निश्चय प्रचुर धनलाभ होगा ।

अंगदकथनम्

अपवादः कृषिर्वाणिज्यं विद्यालाभ एव च । उद्वाहगर्भप्राप्ती च गमनागमनं तथा ॥ गंगाप्राप्तिः क्रमेणैवं फलानि दश कीर्तयेत् ॥ ४ ॥

अंगदवचन

१ तुम्हारा अपवाद कुछ द्रव्य खर्च करनेसे निश्चय शुभ होगा ।
२ कृषिकर्म करनेसे बहुत सुख पावोगे ।
३ तुम मूल द्रव्यसे व्यापार करनेका मतलब करते हो सो सुफल होगा ।
४ विद्यापाठ करनेसे निश्चय बहुत फल पाओगे ।
५ तुम्हारा शुभ स्थान मिलेगा कुछ विलंब है
६ विवाह निजदेशमें बस्तीके पूर्व तरफ होगा ।

७ इस गर्भमें पुत्र उत्पत्ति होगी ।

८ वो निकट ही गमन करता है, जल्दी आवेगा ।

९ तुम अति निकट आगमन करोगे तो शुभ होगा ।

१० तुमको गंगाप्राप्ति अति विचक्षणतासे होगी ।

जाम्बवत्कथनम्

वाणिज्यमपवादश्च विद्योद्वाहश्च सन्ततिः । गर्भचिन्ता तीर्थमृत्युर्गमनागमनं तथा ॥ कृषिकर्मान्तिमं ज्ञेयं विचार्यैतत्सुधीमता ॥ ६ ॥

१ तुमको मूलद्रव्यसे व्यापार करनेकी इच्छा है सो करो बहुत लाभ होगा ।

२ तुम्हारा यह अपवाद दूर होगा, चिंता नहीं करो ।

३ जो विद्या तुम पढोगे, सो जल्दी प्राप्त होगी ।

४ तुम्हारी शादी जल्दी होगी ।

५ तुम्हारे एक कन्या सन्तान होगी ।

६ इस गर्भमें एक भाग्यवती कन्या होगी ।

७ तुम्हारा गंगाके पूर्वमें प्राणत्याग होगा।

८ तुम दक्षिण पूर्वतरफ गमन करनेकी इच्छा करते हो सो करो, सुफल होगी।

९ सो जीव उत्तर पूर्वतरफ गया है, रास्तेमें आता है चिंता मत करो।

१० तुम कृषिकर्म करो शुभ होगा।

वालिकथनम्

गमनं जाह्नवीप्राप्तिः कृषिर्व्यापार एव च। विद्याऽपवादोद्वाहाश्च सन्तानं गर्भ एव च॥ आगमश्चात्र विज्ञेयो फलादेशोऽशुभः स्मृतः॥ ६॥

१ तुम दक्षिणदिशाको जानेकी वांछा करते हो सो न होगी भला नहीं है।

२ तुम्हारा मृत शरीर होनेपर गंगाप्राप्ति होगी।

३ तुम कृषिकर्म मत करो भला नहीं होगा।

४ तुम मूलद्रव्यका व्यापार नहीं करना निश्चय मूल द्रव्यनाश होगा।

५ तुमको विद्यालाभ नहीं होगा ।

६ तुमको इस अपवादसे कलंक होगा ।

७ तुम्हारा अभी विवाह नहीं होगा ।

८ तुम्हारे सन्तान अभी नहीं हैं ।

९ इसके गर्भमें मरा सन्तान है ।

१० सो जीव पूर्वदिशा गया है; आवेगा नहीं ।

हनूमत्कथनम्

आगमः कर्षणं कर्म वाणिज्यमपवादकः । विद्याविवाहसन्तानगर्भचिन्तास्तथैव च ॥ गंगाप्रासिश्च गमनं यत्प्रश्नस्तत्फलं वदेत् ॥ ७ ॥

१ वह जीव दक्षिण पूर्व दिशा गया है आवेगा ।

२ तुम कृषिकर्म करो, बहुत सस्य होगा ।

३ तुम जीवव्यापार करनेकी नसा करते हो लाभ होगा भला है ।

४ तुम्हारा यह अपवाद कुछ खर्च करनेसे दूर होगा।

५ तुम विद्यापाठ करो, देरीसे सुफल होगा।

६ तुम्हारी शादी होगी कुछ विलंब है।

७ तुम्हारे सुंदर सन्तान होगी चिंता नहीं करो।

८ इस गर्भमें उत्तम पुत्र सन्तान होगा।

९ तुमको गंगाप्राप्ति होगी।

१० तुम पूर्वदिशा गमन करना चाहते हो सो करो भला है।

नीलकथनम्

गर्भप्रश्नश्चागमनं गंगाप्राप्तिर्गमस्तथा। कृषिकर्म च वाणिज्यं वादविद्योपयामकाः। सन्तत्यवाप्तिर्यस्यास्ति प्रश्नस्तस्य फलं वदेत्॥ ८॥

१ इस गर्भमें कन्या संतान होगी।

२ सो जीव उत्तर दिशा गया है विलंबसे आवेगा।

३ तुम्हारा कंठ बंद होके गंगाप्राप्ति होगी।

४ तुम उत्तरादिशा गमन करोगे, काज विलंबसे होगा।

५ तुम कृषिकर्म करो, जल होगा, अल्प फल होगा ।
६ तुम जीवका व्यापार न करो, लाभ नहीं होगा ।
७ तुम्हारा यह वाद देरसे छूटेगा ।
८ तुम विद्यापाठ करो, किंचित् फल होगा ।
९ तुम्हारी बस्तीके उत्तर अंश शादी होगी ।
१० तुम्हारी कन्या सन्तान अच्छी होगी ।

नलकथनम्

गंगाप्राप्तिश्च गमनमागमः कृषिरेव च। वाणिज्यमपवादश्च विद्योद्वाहश्च सन्ततिः ॥ गर्भचिन्ता प्रयत्नेन फलं ब्रूयाच्छुभाशुभम् ॥ ९ ॥

१ तुम्हारा गंगालाभ सज्ञानसे होगा ।
२ तुम निकट देशमें गमन करनेकी मनसा करते हो जल्दी गमन करो लाभ होगा ।
३ सो जीव पूर्वदिशा गया है, जल्दी आवेगा ।
४ तुम कृषिकर्म करनेसे बहुत सस्य (अनाज) पावोगे

५ तुमने मूलद्रव्यसे व्यापार करनेकी मनसा की है, करो बहुत लाभ पावोगे ।

६ तुम्हारी आफत एक हफ्तामें दूर होगी ।

७ तुम विद्यापाठ करो बहुत विद्या होगी ।

८ तुम्हारी ग्रामके पूर्वतरफ जल्दी शादी होगी ।

९ तुम्हारे तीन सन्तान होंगी, चिंता नहीं करो ।

१० इस गर्भमें राजाके माफिक सन्तान होगी ।

विभीषणकथनम्

विवाहो दुहितुश्चिन्ता गर्भमागमनं तथा । गंगा-प्राप्तिश्च गमनं कृषिर्वाणिज्यकं तथा ॥ अपवादश्च विद्वत्त्वमेतेषां फलमादिशेत् ॥ १० ॥

१ तुम्हारा वस्तीके दक्षिणदिशामें विवाह होगा, कुछ विलम्ब है ।

२ तुम्हारे कन्या सन्तान होगी, विलम्ब है ।

३ इस गर्भमें उत्तम कन्या होगी ।

४ सो जीव दक्षिण दिशा गया है, आवेगा ।

५ तुमको अवश्य गंगा प्राप्ति होगी ।

६ तुम दक्षिण दिशामें जानेको चाहते हो, विलंब न करो काम सिद्ध होगा ।

७ कृषिकर्म करो, बहुत जल होगा, सुफल पावोगे ।

८ तुम जीव और मूलद्रव्यका व्यापार करना चाहते हो सो करो सुफल होगा ।

९ तुम्हारा अपवाद जल्दी दूर होगा ।

१० तुम विद्या पाठ करो, देरीसे होगा ।

सुग्रीवकथनम्

सन्तानं गर्भचिन्ता च गंगाप्राप्तिस्तथैवच ॥ गमनागमनं चैव कृषिर्लाञ्छनमेव च ॥ वाणिज्यविद्योपयमाः शुभाशुभमुदाहरेत् ॥ ११ ॥

१ ईश्वरकी इच्छासे तुम्हारे विलम्बसे सन्तान होगी ।

२ इस गर्भमें भाग्यवान् सन्तान हैं ।

३ तुम्हारे गंगाप्राप्तिका सन्देह देखा जाता है ।

४ तुम उत्तरदिशा गमन करोगे, तो भला नहीं है ।

५ वह मनुष्य उत्तर पश्चिम दिशामें गया है, सो बहुत देरसे आवेगा ।

६ कृषिकर्म करोगे, तो कष्टसे थोडा फल प्राप्त होवेगा ।

७ तुमको इसी अपवादसे कलंक होगा ।

८ तुम धातु द्रव्यका व्यापार करना चाहते हो सो मत करो ।

९ तुम्हारी विद्या अति कष्टसे होगी ।

१० तुम्हारा बस्तीके उत्तर प्रदेशमें विवाह होगा ।

बलभद्रकथनम्

मनस्कायो बन्धनं च रोगोद्योगशुभानि च ॥ धनं मृत्युश्च साहित्यं वासःसेवा विचारयेत् ॥ १२ ॥

१ तुम मूल और भविष्यत् कर्मकी मनसा करते हो सो अति जल्दी होगी ।

२ तुम्हारी बंदी जल्दी बलात्कारसे मुक्त होगी ।
३ तुम्हारी इडा नाडीमें पित्तका अधिक रोग है जल्दी आराम होगा ।
४ तुमको अभी बहुत तरहका रोजगार होगा ।
५ उस जगहमें कुशल मंगल है, चिंता मत करो ।
६ तुम जल्दी कुछ धन पावोगे, ऐसा देखा जाता है
७ तुम्हारी जल्दी निश्चय मृत्यु होगी ।
८ साहित्य करनेको अति शुभ है ।
९ तुम्हारा इस जगहसे जरूर जाना होगा ।
१० तुम शालग्राम (ठाकुर) पूजनेकी मनसा करते हो सो करो, भला होगा ।

श्रीकृष्णकथनम

बन्धनं रोग उद्योगः कुशलं मृत्युरेव च । सेवा साहित्यवादौ च धनं च मनसेप्सितम् ॥ क्रमात्फलाफलं सर्वमेतेषां फलमादिशेत् ॥ १३ ॥

१ तुम्हारा जल्दी खुलासा होगा ।
२ तुम्हारे अन्तर बाँये नाडीमें कफयुक्त रोग है । भला होगा, ठाकुरजीका प्रसाद लगाओ ।
३ तुम्हारा बहुत रोजगार होगा, परन्तु देरसे ।
४ कुशल समाचार आनन्दसे देखा जाता है ।
५ अभी तुम्हारी मृत्यु नहीं, बहुत विलम्ब है ।
६ तुम विष्णुकी सेवा करनेकी मनसा करते हो सो करो भला होगा ।
७ साहित्य करो, मित्रस्थान है, चिन्ता नहीं ।
८ वास करो; मित्रस्थान है, वाद न करना ।
९ कोई जीवसे कुछ धन पावोगे परन्तु विलम्ब है ।
१० तुमने मनसा करी है सो मनसा सिद्ध होगी । परन्तु कुछ विलम्ब है ।

अनिरुद्धकथनम्

वासो धनं मनस्कामो बन्धनं रोग एव च ॥
उद्यमश्चेष्टदेवस्य सेवा कुशलमेव च ।

साहित्यं निधनं प्रश्नफलं ब्रूयाद्यथायथम् ॥ १४ ॥

१ इस मकानमें वास करनेसे बहुत फायदा होगा।

२ तुम कुछ धन पावोगे विलंब है ।

३ तुम भविष्यत् कर्म बिना धन इच्छा करते हो सो कामना जल्दी पूर्ण होगी ।

४ तुम्हारी यह वंदी देरी से छूटेगी, चिंता मत करो।

५ तुम्हारे अंतर दाहिनी नाडीमें पित्ताधिक्य रोग है. भला होगा, चिंता नहीं करो।

६ तुमको अच्छा रोजगार मिलेगा, विलंब है ।

७ इष्टदेवताकी सेवा करनेसे तुम्हारी इच्छा सिद्ध होगी।

८ उस जगहके कुशल समाचार हैं चिंता नहीं करो।

९ साहित्य करो भला होजायगा ।

१० तुम्हारे मरनेका समय निकट है ।

प्रद्युम्नकथनम्

धनं मनोऽभीप्सितं च बन्धनं रोग एव च। उद्यमो
मृत्युचिन्ता च कुशलं देवसेवनम् ॥ साहित्यं
वसतिर्ज्ञेयाब्रूयादेतत्फलं शुभम् ॥ १९ ॥

१ तुम मूलद्रव्यसे व्यापार करोगे तो जल्दी धन मिलेगा।
२ तुमने अन्न जलादि दान कर्म करनेकी मनसा की है सो वाञ्छा सिद्ध होगा।
३ तुम्हारी बन्दी कुछ दिनमें बहुत कष्टसे जायगी।
४ तुम्हारी अंतर मध्य नाडीमें कफमिश्रित रोग है। तिससे बहुत कष्टसे भला होगा।
५ तुम्हारा बहुत जल्दी रोजगार होगा।
६ तुम्हारी मृत्यु होगी गुरुगोविंदको भजो।
७ तुम्हारा कुशल होगा चिंता मत करो।
८ तुम्हारी देवसेवा करनेकी इच्छा है करो शुभ है,
९ तुम्हारा साहित्य योग्य है करो भला है।
१० इस जगह वास करनेसे राजाके तुल्य रहोगे।

कामदेवकथनम्

सेवासाहित्यवासाश्च धन चिन्ता तथैव च ।
मनस्कामोबन्धनं च रोगोद्योगसुखानि च ॥
मृत्युचिन्ता भवेद्येषां ते योऽदः फलमा-
दिशेत् ॥ १६ ॥

१ तुम भगवती देवीकी सेवा करनेकी इच्छा करते हो सो करो शुभफल होगा ।

२ तुमको साहित्य करनेमें विलंब होगा ।

३ तुम उस जगहपर वास करनेकी इच्छा करते हो सो करो भला होगा ।

४ तुमने धातुके व्यापारसे कुछ धन पाया है ।

५ तुम धातुकी चिंता करते हो कामना पूर्ण होगी ।

६ तुम्हारी यह बंदी छुटती है चिन्ता नहीं करो ।

७ तुम्हारे अंतर दाहिनी नाडीमें रोग है इसलिये अपने देशमें जाओ, भला होगा ।

८ तुम्हारा रोजगार एक बार अच्छा हो चुका है ।

९ वह कुछ पीडित है ऐसा देखा जाता है ।
१० तुम्हारे मरनेकी पीडा हुई है सो चिन्ता मत करो कुछ दान पुण्य करो ।

सांबकथनम्

साहित्यं वासकार्यं च कुशलं मानसेच्छितम् । बन्धनं रोग उद्योगो निधनं सेवनं तथा ॥ धनचिन्ता च यस्यैते प्रश्नास्तेषां फलंवदेत् ॥ १७ ॥

१ तुम साहित्य करो संगी होगा जाना जाता है ।
२ तुम इस स्थानमें वासकरो, जल्दी जावो; अच्छाहै ।
३ तुम्हारी उस जगहकी कुशलवार्ता वहांके लोगोंसे दक्षिण पूर्व दिशामें जायगी ।
४ तुम्हारी वस्तीके दक्षिण पूर्व जानेकी इच्छा है ।
५ तुम्हारी बडे कष्टसे बंदी छूटेगी ।
६ तुम्हारी अंतरमध्यनाडी और दाहिनी नाडीमें वात पित्ताधिक्य रोग है सो कष्टसे टूटेगा ।

७ तुम्हारा रोजगार होगा विदेश गमन करो ।

८ तुम्हारी मृत्यु होगी विलंब नहीं ।

९ तुम शिवलिंगकी सेवा करो और मानसिक सेवा करनेकी इच्छा है सो करो सफल होगा ।

१० तुम वस्तीसे दक्षिणपूर्व गमन करो, धन पाओगे।

महादेवकथनम्

कुशलं मृत्युचिन्ताच धनचिन्ता तथैवच। साहित्यसेवावासाश्च मनस्कामश्च बन्धनम् ॥ उद्यमो दशमः प्रोक्तो विचार्य फलमादिशेत् ॥ १८ ॥

१ तुम्हारा उस जगहका कुशल समाचार सब आनन्द है

२ तुम्हारी मृत्यु अभी नहीं, सुख भोग करो ।

३ कुछ धन मित्र और ब्राह्मणोंसे पावोगे ।

४ तुम जल्दी साहित्य करो राजयोग है ।

५ तुम मृन्मय देवकी सेवा करो शुभ है ।

६ इस जगह वास करो, राजाके बराबर रहोगे ।

७ तुमने मनमें जो किया है सो कामना सिद्ध होगी।

८ तुम बंदीसे छूटोगे पर कुछ खर्च होगा।

९ तुम्हारी दाहिनी बांई नाडीमें कफपित्ताधिक्य रोग हुआ है, जल्दी छूटगा ।

१० तुम्हारा अब बहुत रोजगार होगा चिंता मत करो।

गणेशकथनम्

उद्योगः कुशलं नित्यं मृत्युः सेवा स्थितिस्तथा।
धनप्राप्तिश्च साहित्यं मनस्कामस्तथैवच ॥
बन्धनं व्याधिसहितमेतेषां फल मादिशेत् ॥१९॥

१ विलंबसे तुम्हारा रोजगार होगा।

२ तुम उस जगहको मंगलके वास्ते चाहते हो ।

३ तुम्हारी मृत्यु अभी नहीं कुछ विलंब है ।

४ तुम धातु निर्मित ठाकुरकी सेवा करना जो जीवनेको मनसा करते हो ।

५ तुम इस जगहमें वास करनेसे बहुत कष्ट पावोगे ।
६ तुम कुछ धन पाओगे, बहुत विलंब है ।
७ साहित्य करना भला ऐसा अबही नहीं देखा जाता है।
८ तुमनें धातुकी मनसा करी है देरसे सिद्ध होगी।
९ तुम्हारी बन्दी देरीसे छूटेगी ।
१० तुम्हारे अन्तरमध्य नाडीमें बीमारी है । तिससे बहुत कष्ट पावोगे, ऐसा देखा जाता है ।

कार्तिकेयकथनम्

व्याध्युद्योगौ सेवनं च मृत्युः साहित्यमेव च । कुशलं वसतिर्द्रव्यं मनोऽभिलषितं तथा॥ बन्धनं च विजानीयाच्छुभाशुभफलं वदेत् ॥ २० ॥

१ तुम्हारे अन्तरदाहिनी नाडीमें पित्ताधिक्य रोग है उपायसे जल्दी आराम होगा ।
२ तुम्हारा रोजगार विलम्बसे होगा ।
३ तुम शक्तिकी सेवा करो, शुभ फल पावोगे ।

४ तुम मृत्युके सम्मुख हो रहे हो, विलम्बसे मरोगे।
५ साहित्यका समय गया है; अब भला नहीं ।
६ कुशल समाचार है, चिंता न करना ।
७ इसी जगहमें वास करो, निश्चय मंगल होगा ।
८ तुमने धन पाया है और पावोगे भी ।
९ तुमने धातु और जीवकी मनसा की है सो विलंबसे पूर्ण होगी ।
१० तुम बन्दीसे जल्दी छूटोगे, परन्तु धनव्यय होगा।

गरुडकथनम्

निधनं सेवनं वासो धनचिन्ता मनोरथः ॥ बन्धनं व्याधिरुद्योगः साहित्यं कुशलं तथा ॥ विचार्य फलमेतेषां पृच्छकाय निवेदयेत् ॥ २१ ॥

१ तुम्हारी मृत्यु निकट है सत्यसे मरोगे ।
२ तुम धातुसे निर्मित देवताकी सेवा करो, फल होगा ।
३ इस जगहमें वास करनेसे पीडा होगी ।
४ तुम धनकीचिंता करते हो परन्तु नहीं पावोगे ।

५ तुम धातुचिन्ता और भविष्यत् कर्मफलका मनोरथ करते हो, बहुत विलम्बसे सिद्ध होगा।

६ तुम इस बन्दीसे बहुत कष्ट पावोगे और बहुत विलंबसे छूटोगे।

७ तुम्हारे अंतर्मध्य नाडीमें पित्ताधिक्य धातुहानि आदि रोग हैं, बहुत कष्टसे निरोगी होगे।

८ तुमको रोजगार कुछ नहीं होगा, खर्च होगा।

९ साहित्य करनेसे विलम्बमें थोड़ी प्राप्ति होगी।

१० उस स्थानकी कुशल खबर है, शत्रु हाथ लगेगा।

अर्जुनकथनम्

पृष्ठलग्नारिमुक्तिश्च मिलनं संग एव च ॥ विवादः समरश्चिन्ता मन्त्रो यात्रा धनागमः ॥ नष्टद्रव्यस्यापिगमश्चैवं सर्वं फलं वदेत् ॥ २२ ॥

१ शत्रु तुम्हारा पीछा छोडेगा, चिंता न करना।

२ कुछ विलंबसे तुम्हारे साथ मित्रका मिलाप होगा।

३ तुम इसको संग लावो चिंता नहीं करो; यह मित्र है।
४ तुम अभी विवाद न करना, शरम पावोगे ।
५ तुम उसके साथ युद्ध न करना, क्योंकि वह मित्रहै ।
६ तुम भविष्यत्कर्म भावते हो सो जल्दी छूटेगा ।
७ तुम अभी मंत्र करो, करनेसे भला होगा ।
८ तुम इस जगह याचना करो, मांगनेसे पावोगे ।
९ तुमको धनप्राप्ति होगी, अब विलंब नहीं है ।
१० तुम्हारा मोलयुक्त धातुद्रव्य खो गया है सो घरमें खोजो पावोगे ।

युधिष्ठिरकथनम्

मन्त्री चिंता विवादश्च युद्धं नष्टधनं तथा। मिलनं याचनं प्राप्तिःपृष्ठगारिविमोचनम् ॥ संगतिश्च तथैतेषां जानीयात्क्रमगं फलम् ॥ २३ ॥

१ तुम मंत्री न करना वह बडा कपटी है, दुश्मन होगा।
२ तुम धातु आदिकी चिंता करते हो सो चिंता जल्दी छूट जायगी ।

३ तुम इस मनुष्यसे विवाद न करना, करनेमें हारोगे ।
४ तुम युद्ध करो जय होगा, चिंता नहीं भला है ।
५ तुम्हारी धातुद्रव्य खोगई सो तुम्हारे घरके पश्चिम उत्तर घरमें खोजो मिलेगी ।
६ जानेमात्रसे तुम्हारे साथीका मिलन होगा ।
७याञ्चा करो पावोगे, चिंता न करना ।
८ तुमको प्राप्ति बहुत होगी, सुखसे काम करो ।
९ शत्रु तुम्हारा पीछा छोड़ेगा, कष्ट मत पावो ।
१० संग करनेसे मंद होगा, संग न करना ।

नकुलकथनम्

प्राप्तिर्नष्टधनं पृष्ठलग्नारिमिलनं तथा ।
संगो विवादो युद्धं च चिन्ता मन्त्री च याचनम् ॥ २४ ॥

१ जल्दी तुम्हारेको बहुतसी प्राप्ति होगी ।
२ तुम्हारी सात धातुकी द्रव्य खो गई है घरमें मिलेगी ।

३ तुम्हारा पीछा छूटेगा चिंता न करना।
४ तुम्हारे साथ मिलन होगा।
५ तुम संगी करो, भला होगा, चिंता नहीं करो।
६ तुम विवाद करो निश्चय जय होगी।
७ तुम युद्ध करो, जल्दीसे जय होगी।
८ तुम्हारी चिंता जल्दी मिटेगी, शंका नहीं करो।
९ मंत्री करो वह राजाके समान होगा।
१० याचना करनेसे बहुत मिलेगा, जल्दी करो। चिन्ता नहीं ऐसा जाना जाता है।

दुर्योधनकथनम्

चिन्ता याञ्चा च सम्प्राप्तिर्मैत्रीपृष्ठगता हितः॥ नष्टद्रव्यं संगतिश्च मिलनं युद्धसुद्धहः॥ शुभाशुभं फलं ज्ञात्वा क्रमात्सर्वं निवेदयेत्॥ २९॥

१ तुम्हारी यह चिंता अति जल्दी दूर होगी ऐसा जाना जाता है।

२ तुम याचना करना न छोड़ना निश्चय पावोगे ।
३ तुमको प्राप्ति होगी, चिंता न करना ।
४ तुम यह मंत्री करो अति बोधवान् होगा ।
ऐसा जाना जाता है ।
५ तुम्हारा पीछा छूटेगा, चिंता न करना ।
६ नष्ट द्रव्य अब न मिलेगा ।
७ तुमको उस आदमीकी संगत करनेसे भला नहीं, कष्ट पावोगे ।
८ वो बड़ा आदमी है उसके साथ मिलन न होगा ।
९ तुम युद्ध कदापि न करना, वे लोग बली हैं ।
१० विवाह करनेसे क्लेश होगा ऐसा जाना जाता है ।

भीमकथनम्

नष्टं पृष्ठगतः शत्रुश्चिन्ताप्राप्तिर्विवादकः ॥
युद्धसंगौ च मिलनं याञ्चा मैत्री तथैव च ॥
फलाफलं वदेद्धीमान्विचार्य च पुनः पुनः ॥२६॥

१ तुम्हारा जीव (जानवर) खोया गया है सो अति कष्टसे पावोगे ।

२ तुम्हारा शत्रुसे पीछामें कुछ होगा नहीं विलंब-मात्रसे छूटोगे ।

३ तुम्हारी यह चिंता देरमें छूटेगी ।

४ तुम्हारेको प्राप्ति अब भी नहीं होगी ।

५ तुमविवाद मत करो, इसमें कुछ फल नहीं है ।

६ तुम युद्ध करो देरीसे जय होगी ऐसा जाना जाता है ।

७ तुम संगी करो, वह मित्र है, चिंता नहीं ।

८ तुम्हारे साथ उसका मिलन होगा देर है ।

९ तुम माँगनेसे नहीं पावोगे वो बडा मन्द है ।

१० तुम्हें इसे मन्त्री करनेसे भला होगा ।

सहदेवकथनम्

याञ्चा प्राप्तिश्च नष्टत्वं पृष्ठलग्नो विपक्षकः। मिलनं संगतिश्चिन्ता विवाहः सौहृदं रणः ॥ एतत्फलं वदेल्लोके यत्र तत्र शुभाशुभम् ॥ २७ ॥

१ तुम याचना करो निश्चय पाओगे ।

२ तुम्हारे को प्राप्ति होती है और भी पाओगे, ऐसा जाना जाता है ।

३ तुम्हारा मूलद्रव्य खोया गया है सो पाओगे चिंता न करना ।

४ शत्रु तुम्हारा पीछा छोड़ेगा पर बहुत कष्ट देगा ।

५ तुम्हारे साथ जिसका मिलना होगा वह ब्राह्मण है ।

६ तुम इसका संग न करना, भला न होगा ।

७ तुम्हारी चिंता देरीसे छूटेगी ऐसा देखा जाता है ।

८ तुम उसके साथ कदाचित् विवाद न करना ।

९ तुम्हारा यह मित्र भला नहीं कुबुद्धिदायक है ।

१० तुम उसके साथ युद्ध न करना ।

भीष्मकथनम्

संगो युद्धं च मिलनं याञ्चा सम्प्राप्तिसौहृदे । पृष्ठ लग्नो विपक्षश्च विवादे विजयस्तथा ॥ नष्टलब्धिश्च चिन्ता च भवेदेतच्छुभं फलम् ॥ २८ ॥

१ तुम भला संग करोगे, ऐसा जाना जाता है ।
२ तुम युद्ध करो जय होगी, देखा जाता है ।
३ उस मनुष्यके साथ अब ही मिलन न होगा ।
४ तुम उस जगह माँगनेसे नहीं पावोगे ।
५ तुम्हारेको प्राप्ति अभी होगी, जाना जाता है ।
६ तुम मैत्री करो यह आदमी बड़ा बुद्धिमान् है ।
७ तुम्हारा पीछा अब छूटेगा नहीं, सावधान रहना ।
८ तुम विवाद करो जय होगी, चिंता नहीं ।
९ तुम्हारा धातुद्रव्य खोया गयाहै, पावोगे तलाश करो।
१० तुम्हारी चिंता छूटेगी, कुछ विलंब है ।

दुःशासनकथनम्

मिलनं संगतिर्याञ्चा नष्टद्रव्यं चसौहृदम्। पृष्ठलग्नारिमुक्तश्च विरोधः संगरस्तथा।। चिन्ताचदशमीप्राप्तिः क्रमात्सर्वं विचारयेत् ॥ २९ ॥

१ तुम्हारा उस मनुष्यके साथ जल्दी मिलन होगा ।
२ तुम्हारा यह संगी होनेसे भला होगा ।
३ तुम मांगनेसे पावोगे जाना जाता है ।
४ तुम्हारी धातुद्रव्य खोई है, सो कष्टसे पावोगे ।
५ तुम मैत्री करो पीछे भला होगा, बडा बुद्धिमान् है ।
६ इस शत्रुके पीछासे तुम जल्दी छुट्टी पावोगे ।
७ तुम विरोध करो निश्चय जय होगी ।
८ तुम युद्ध करो जय होगी चिंता नहीं करना ।
९ तुम्हारी यह चिंता जल्दी छूटेगी ।
१० तुम्हारेको प्राप्ति अन्न बहुत होगी चिंता नहीं करना।

अहिवरकथनम्

विरोधामात्ययुद्धानि संगश्चिन्ता च याचनम् ॥ संप्राप्तिर्मिलनं नष्टं पृष्ठतोरिविमोचनम् ॥ शुभाशुभफलं ज्ञात्वा क्रमात्सर्वं निदयेत् ॥ ३० ॥

१ वह तुम्हारा आदमी है, उसके साथ विरोध न करना।
२ यह मन्त्री बालबुद्धि है, इससे कार्य्य सिद्ध नहीं।
३ तुम युद्ध करनेसे बलहीन होगे आगे जय पीछे मन्द।
४ यह संगी बालक समान है, भला नहीं होगा।
५ तुम्हारी यह मिथ्या चिंता दूर होगी।
६ याचना करो, अल्प कुछ पावोगे।
७ तुमको प्राप्ति होगी कुछ विलंब है जान लेना।
८ तुम्हारा द्रव्य खो गया है घरमें पावोगे खोजो।
९ तुम्हारा आदमी है उसके साथ मिलन विलंबसे होगा।
१० तुम्हारा इस पीछासे कुछ होगा नहीं जल्दी छूटोगे।

कर्णकथनम्

युद्धं विवादोऽमात्यश्च चिंता याञ्चाप्तिरेव च। नष्टद्रव्यं मोक्षणं च शत्रोर्मिलन-

संगती ॥ प्रश्नोत्तराणि चैतानि कथनीयानि धीमता ॥ ३१ ॥

१ तुम युद्ध करो मंत्री बिना जय होगी ।

२ तुम उस आदमीसे कदापि विवाद न करना ।

३ तुम्हारा इस मन्त्रीसे बड़ा विरोध होगा ।

४ तुम्हारी यही चिन्ता है और न होगी ।

५ तुम याचना करो अवश्य कुछ पावोगे ।

६ तुम्हारी प्राप्ति अब भली होगी ।

७ तुम्हारा धातु द्रव्य खोया गया है तुम्हारा अन्तरंगके निकट है पानेके विरोधमें है ।

८ तुम्हारा यह पीछा देरसे जावेगा ।

९ तुम यहसंग करो चिन्ता नहीं परंतु यह बालबुद्धि है ।

१० वो तुम्हारा आदमी है दर्शनमात्रसे मिलन होगा ।

अंगिरः कथनम्

समयः प्रलयश्चैव ग्राहकः क्रयविक्रयौ ।
स्थानसंबन्धशंकाश्च विश्वासः किंकर-

स्तथा ॥ राजकार्यंतथैतानि फलानीमा निचादिशेत् ॥ ३२ ॥

१ तुम्हारा इस समय भला होगा । चिन्ता नहीं ।
२ तुम इस प्रलयमें खुशीसे रक्षापावोगे ।
३ तुम्हारे इस द्रव्यका ग्राहक विलंबसे होगा ।
४ तुम्हारा यह द्रव्य देरकर बिकेगा तो भला होगा ।
५ तुमको यह स्थान छोड़ना होगा ।
६ संबध तुम्हारा बस्तीके पूर्व अंश होगा ।
७ तुम इसमें कदापि शंका न करना ।
८ तुम इसपर विश्वास करो चिंता नहीं ।
९ तुम यह दूत उस जगह पठावो काज होगा ।
१० तुम्हारा यह राजकाज बालकोंके समान होता है बहुत उत्पात उठेंगे ।

अगस्त्यकथनम्

स्वस्थानं ग्राहकश्चैव तथा च क्रय-विक्रयौ ॥ संबन्धः प्रलयश्चिन्ता विश्वासः

किंकरस्तथा ॥ राजकार्यं क्रमादेतत्फलं सर्वमुदाहरेत् ॥ ३३ ॥

१ तुम इस स्थानको कदापि मत छोड़ना, भला होगा ।
तुम्हारे इस द्रव्यके ग्राहक बहुत होंगे ।
३ तुम इस द्रव्यको बेंचो विलम्बसे लाभ होगा ।
४ तुम्हारा यह द्रव्य रखके बेचनेसे बहुत लाभ होगा ।
५ तुम्हारा संबन्ध बस्तीके पूर्व निज गावमें होगा ।
६ तुमको स्वस्थान छोड़ना होगा क्योंकि प्रलय है
७ तुम यह चिन्ता कदापि न करना, चिंता नहीं ।
८ तुम इसका विश्वास करो चिंता नहीं ।
९ तुम यह दूत वहां पठावो काज होगा ।
१० तुम्हारा यह राजकाज बालकोंके समान है, उत्पात बहुत होगा ।

दुर्वासाकथनम्

सम्बन्धो राजचिन्ता च दूतः प्रलयएव च । शंका च समयश्चैव स्थानग्रा-

हकविक्रयाः ॥ विश्वासश्च क्रमादेतत्फलं ज्ञात्वा निवेदयेत् ॥ ३४ ॥

१ तुम्हारा इस स्थानमें सम्बन्ध करनेसे भला नहीं होगा।

२ तुमको इस राज्यमें सुख नहीं, उत्पात है।

३ उस जगह दूत पठानेसे कार्य नष्ट होगा।

४ तुम इस आफतसे रक्षा पावोगे; चिंता न करना।

५ तुम इसमें शंका (चिंता) न करना निर्भय रहो।

६ तुम्हारा इस समय भला होगा।

७ तुम्हारा यह स्थान भला नहीं छोड़ दो।

८ तुम ग्राहकके वास्ते चाहना मत करो निश्चय गाहक होगा।

९ तुम यह द्रव्य बेंचो, लाभ होगा।

१० तुम इसका विश्वास करो, अवश्य फल पावोगे।

जनकवचनम्

प्रलयः समयश्चैव विश्वासो दूत एव च।
राज्यलाभो विक्रयश्च सम्बन्धो ग्राहक-

स्तथा ॥ स्वस्थानं च तथा शंकां ज्ञात्वैतत्फलमादिशेत् ॥ ३८ ॥

१ तुम्हारी इस प्रलयसे रक्षा होगी, शंका नहीं ।

२ तुम्हारा यह समय बडा मंद है, मृत्युतुल्य होगा ।

३ तुम इसका विश्वास न करना, इसको देनेसे न मिलेगा।

४ तुम्हारा उस जगह दूत पठानेसे कार्य सिद्ध नहीं होगा।

५ तुमको राज्यलाभ न होगा ऐसा जाना जाता है ।

६ तुम्हारा यह द्रव्य अभी विक्रय न होगा ।

७ इस स्थानमें सम्बंध मत करना भला नहीं ।

८ ग्राहक अब न होगा ऐसा जाना जाता है ।

९ तुम यह जगह छोड़के जाओ, स्थान भला नहीं ।

१० तुम्हारी यह शंका कुछ नहीं, चिंता न करना ।

नारदकथनम्

राज्येष्टं समयः स्थानं तथा ग्राहकविक्रयौ ।

शंका प्रलयसम्बन्धौ विश्वासः किंकरस्तथा ॥ यथातथं फलं ब्रूयाच्छुभं वा यदि वाऽशुभम् ॥ ३६ ॥

१ तुम्हारा इस राज्यमें अति शुभ होगा ।
२ तुम्हारा यह समय अति सुखसे कटेगा ।
३ तुम यह जगह मत छोडो, यहीं सुख भोग होगा।
४ तुम्हारा ग्राहक हुआ है भावना मत करो।
५ तुम्हारा यह द्रव्य विक्रय हो चुका, चिंता न करना।
६ तुम्हारी यहाँ शंका है ।
७ तुम्हारा बस्तीके दक्षिण अंशमें सम्बन्ध हुआ है, सो भला है ।
८ तुम्हारेको इस प्रलयसे रक्षा पावनी कठिन है, ऐसा देखा जाता है ।
९ तुम इसका विश्वास करो भला है चिंता नहीं ।
१० तुम उस जगह दूत पठावो, कार्य सिद्ध होगा ।

सनककथनम्

विश्वासदूतराज्यानि समयो ग्राहकस्तथा। । स्थानप्रलयचिन्ताश्च सम्बंधो विक्रयस्तथा ॥ शुभं वा यदि वाऽनिष्टं ज्ञात्वा फलमुदाहरेत् ॥ ३७ ॥

१ तुम इसका कदापि विश्वासनकरना छोड़नेसेनमिलेगा।

२ तुम सब जगह दूत पठावो, कार्यसिद्ध होगा।

३ तुम्हारेको इस राज्यमें बहुत सुख मिलेगा।

४ तुम्हारा यह समय अच्छा है, बहुत सुख पावोगे।

५ तुम्हारे ग्राहक बहुत होंगे, चिंता नहीं करना।

६ तुम इस स्थानको मत छोड़ो, शेष भला होगा

७ तुम इस प्रलयमें जल्दी रक्षा पावोगे, चिंता नहीं।

८ तुम्हारे इस काममें चिन्ता होती है।

९. तुम्हारी बस्तीके पूर्व दिशामें संबन्धकी बात होती है, वहां जावो।

१० तुम्हारा यहां द्रव्य तुरंत विक्री होगा, चिंता नहीं।

सनन्दनकथनम्

दूतः प्रलयविश्वासौ राज्यं समय एव च । विक्रय्यवस्तु द्रव्यं च स्वस्थानं संगतिस्तथा ॥ संबंधश्च तथैतेषां फलं सर्वं विचारयेत् ॥ ३८ ॥

१ तुम वहां मत दूत पठावो कार्य सिद्ध नहीं होगा ।
२ तुम्हारी इस प्रलयसे रक्षा कठिन है ।
३ तुम इसका विश्वास मत करना, भला नहीं ।
४ तुम्हारेको इस राज्यमें सुख नहीं ।
५ तुम्हारा समय भला नहीं, मृत्यु समान देखा जाता ।
६ तुम्हारी यह वस्तु अब विक जायगी ।
७ तुम्हारे उस द्रव्यका लाभ कभी न होगा ।
८ तुम यह स्थान छोड़ो और दूसरे स्थानमें जावो ।
९ तुम इसके संगसे बहुत कष्ट पावोगे ।
१० तुम्हारा उस जगह संबन्ध करनेसे भला न होगा ।

वसिष्ठकथनम्

शंकासम्बन्धस्थानानि तथा विश्वासकिं

करौ। राज्यं च समयश्चैव विक्रयस्तु धनस्य च ॥ ग्राहकः प्रलयश्चान्त्यः फलान्येतान्युदाहरेत् ॥ ३९ ॥

१ तुम्हारी यह शंका वृथा है, क्या देखते हो।
२ तुम यह संबन्ध न करना, अन्तमें भला नहीं।
३ तुम इस स्थानको छोड़के कहीं मत जाना।
४ तुम इसका कदापि विश्वास न करना यह दुष्ट है।
५ तुम उस जगहपर दूत पठावो कार्य सिद्ध होगा।
६ तुम्हारे इस राज्यमें सुख होगा, चिंता नहीं।
७ तुम्हारा अब समय भला आया ऐसा देखा जाता है।
८ तुम इस द्रव्यका विक्रय करो लाभ होगा।
९ तुम्हारा इस द्रव्यका अब ग्राहक होगा।
१० तुम इस प्रलयमें कष्टसे रक्षा पावोगे।

बिथिलकथनम्

शंकाविक्रयचिंताश्च वासःस्थानं तथैव च।
विश्वासः किंकरो राज्यं समयः प्रलयस्तथा॥

द्रव्याणां ग्राहका नूनं भविष्यंति न संशयः। एतेषां तु फलं ज्ञात्वा वदेत्सर्वं शुभाशुभम् ॥ ४० ॥

१ तुम इसमें कभी शंका न करना चिंता नहीं।

२ तुम्हाराद्रव्यकुछदिनकेबादविक्रयहोनेसे लाभहोगा।

३ तुम्हारा बस्तीके उत्तर संबंध हुवा है सो भला है।

४ तुम इस स्थानको मत छोड़ो अब भला है।

५ तुम उसका विश्वास करो, फल अवश्य पावोगे।

६ तुम उस जगह दूत पठावो, कार्य सिद्ध होगा।

७ तुम्हारा इस राज्यमें भला होगा ऐसा देखा जाता है।

८ तुम्हारा थोड़ा दिन जानेसे शुभ समय होगा।

९ तुम इस प्रलयसे जल्दी रक्षा पावोगे चिंता क्या।

१० तुम्हारे इस द्रव्यके ग्राहक बहुत होंगे।

इति श्रीहनूमज्ज्योतिषं सम्पूर्णम्।

श्रीः

अथ काकचरित्रम्

भाषाटीकासमेतम्



अर्जुन उवाच

काकस्य चरितं वक्ष्ये यथोक्तं मुनिभाषितम् ॥
यस्य विज्ञानमात्रेण सर्वं तत्त्वं लभेन्नरः ॥ १ ॥

एक समयमें श्रीअर्जुनजीसे नागराज पूछते भये कि हे राजन् ! काकबोलीका फलाफल किस तरहसे मालूम होता है ? यह सुनके श्रीअर्जुनजी नागराजसे प्रकाशकर बोले कि हे राजन् ! सुनो काकका सब चरित्र प्रगटरूप हम कहते हैं। दिनके दण्ड (घडी) प्रमाणसे काककी जो ध्वनि सुनी आती है उस ध्वनिका फलाफल जाना जायगा मुनिगण उसका विचार कह गये हैं, सो हम तुमसे सब प्रकाश करके कहते हैं ।

प्रातःकाले काकवचनम्

यदा प्रथमदण्डे पूर्वपार्श्वे 'अय अय' शब्दं रटति काकस्तदा पौरुषलाभवार्तां कथयति ॥ १ ॥

एक दण्ड दिन प्रातःसमयमें जो काक 'अय अय' ध्वनि करे, तो उस दिन सर्वत्र महान् सुख होगा ।

द्वितीयप्रश्नः

यदा पक्षदण्डे अग्निकोणे 'अय अय' शब्दं रटति काकस्तदा शोकवार्तां कथयति ऊर्ध्वमुखोऽधोमुखो वा रटति तदा दूरदेशतः पुत्रतो वा शोकवार्तां कथयति ॥ २ ॥

दिनमें दो दण्डके समय अग्निकोणमें यदि 'अय अय' शब्द काक करे तो शोक उपस्थित होगा, परन्तु ऊर्ध्वमुख ह्वैके वह शब्द करे तो दूरसे शोकसंवाद आवेगा. यदि अधोमुख ह्वैके शब्द करे तो बेटासे शोक उपस्थित होगा ।

तृतीयप्रश्नकथनम्

तृतीयदण्डे दक्षिणदिशि 'मुय मुय' रवंयदा रटतिकाकस्तदा वृत्तिलाभवार्तां कथयति ॥ ३ ॥

सबेरे दिनमें तीन दंड समयतक दक्षिण दिशामें यदि काक 'मुय मुय' शब्द करे तो उस घरके मनुष्य को उस दिन अकस्मात् निश्चय धनलाभ होगा ।

चतुर्थप्रश्नकथनम्

नैऋतकोणे चतुर्थदण्डे यदा 'मुय मुय' शब्दं रटति काकस्तदा अग्निचौरभयं तूर्ध्वमुखो ऽधोमुखो वा काकः राजतोऽन्यतो वा भयं कथयति ॥ ४ ॥

प्रातःकाल दिवा चार दंड समय नैर्ऋत कोणेसे काक यदि 'मुय मुय' शब्द करे तो अग्नि चोरभय होय और यदि ऊर्ध्वमुख होके रव करे तो राजभय और अधोमुख हो रव करे तो अन्यभय होगा ।

पञ्चमप्रश्नः

'अहा अहा' रवं पञ्चमदण्डे पश्चिमदिशि-
यदा रटति काकस्तदा वृत्तिलाभवार्तां कथयति ऊर्ध्वमुखो रटति तदा विदेशतो धनलाभः। अधोमुखो रटति तदाऽऽशु धनलाभः ॥ ५ ॥

पांच दण्ड समय पश्चिम दिशासे काक यदि 'अहा अहा' ध्वनि करे तो उस दिनसे मनुष्यको धनलाभ होगा और ऊर्ध्वमुख होके बोले तो विदेशसे धनलाभ होगा यदि अधोमुख होके बोले तो जल्दी धनप्राप्ति होगी यह निश्चय जानो।

षष्ठप्रश्नः

'कहा कहा' रवं षष्ठदण्डसमये पश्चिमदिशि यदा रटति काकस्तदा कार्यप्रदायकवार्तां कथयति ॥ ६ ॥

पश्चिम दिशासे षट्दंड समयमें काक यदि 'कहा कहा' ध्वनि करे तो निश्चय कार्यलाभ होगा।

सप्तमप्रश्नः

सप्तमदण्डे वायुकोणे 'आहे आहे' रवं यदा रटति काकस्तदा व्याधिना मरणं कथयति ॥ ७ ॥

वायुकोणते सप्तम दंड समयमें यदि 'आहे आहे' काक ध्वनि करे तो उस वस्तीमें व्याधियुक्त होके कोई मरेगा।

सप्तमदण्डे उत्तरदिशि 'जा जा' रवं यदा रटति काकस्तदा अन्यवार्तां कथयति।

दिवा (दिन) सात दंड समयमें उत्तर दिशासे यदि काक 'जाजा' शब्द करे तो कोई और ही सुननेमें आवे।

अष्टमप्रश्नः

अष्टमदण्ड ऐशान्यां 'हा हा' रवं यदा रट-

ति काकस्तदा मरणवार्त्तां कथयति ॥८॥

दिन अष्टदण्ड समयमें ईशानकोणसे यदि काक 'हा हा शब्द करे तो उस दिन बस्तीमें कोई मरेगा अथवा दूर देशसे मृत्युकीवार्ता प्राप्त होगी ।

नवमप्रश्नः

नवमदण्डे ब्रह्मस्थाने 'हा हा' रवं यदा रटति काकस्तदा प्रार्थनावार्त्तां कथयति ॥ ९ ॥

दिन नवदण्ड समयमें ब्रह्मस्थान अर्थात् मस्तकके ऊपर यदि काक 'हा हा' शब्द करे तो इसी रोज पूर्व प्रार्थना सुनावेगा ।

दशमप्रश्नः

दशमे दण्डे सम्मुखे' आवा आवा' रवं यदा रटति काकस्तदा शुभवार्त्तां कथयति ॥१०॥

दिन दशदण्ड समयमें जो मनुष्यके सम्मुख काक 'आवा आवा' शब्द करे तो उस समयको दैवात् कोई शुभवार्ता सुननेमें आवे ।

एकादशप्रश्न

एकादशे दण्डे अग्निकोणे 'भज भज' रवं यदा रटति काकस्तदा पुत्रलाभवार्तां कथयति ॥ ११ ॥

दिनके एकादशदण्ड समयमें अग्निकोणसे यदिकाक 'भज भज' शब्द करे तो उस रोज उस बाड़ीमें किसीको भी पुत्रसन्तान होगा।

द्वादशप्रश्नः

द्वादशदण्डे वायुकोणे 'जय जय' रवं यदा रटति काकस्तदा शोकवार्तां कथयति ॥ १२ ॥

दिन बारहदण्ड समयमें यदि काक वायुकोणसे 'जय जय' ध्वनि करे तो उस गृहमें निश्चय कोई प्रकारका शोक उपस्थित होगा।

त्रयोदशप्रश्नः

त्रयोदशदण्डे नैऋत्यकोणे 'का का' रवं

यदा रटति काकस्तदा महादुःखवार्तां कथयति ॥ १३ ॥

दिन तेरह दण्ड समयमें जो नैर्ऋत्य कोणमें यदि काक 'का का' शब्द करे तो उस घरके प्राणीको बड़ा कष्ट होगा ।

चतुर्दशप्रश्नः

चतुर्दशदण्डे उत्तरदिशायां 'कौवा कौवा' ध्वनिं यदा रटति काकस्तदा शत्रुभयं कथयति १४ ॥

दिन चतुर्दशदण्ड समयमें यदि काक उत्तर दिशाते 'कौवा कौवा' शब्द करे तो उस रोज उस घरमें मनुष्यको अकस्मात् शत्रुभय होगा ।

पञ्चदशप्रश्नः

पञ्चदशदण्डे ऐशान्यं 'जा जा, शब्दं यदा रटति काकस्तदा महादुःखलाभं कथयति ॥ १५ ॥

दिन पन्द्रह दण्ड समयमें यदि ईशान कोणमें काक 'जा जा' शब्द करे तो उस बाड़ीमें कोई मनुष्यका मन महादुःखयुक्त होगा।

षोडशप्रश्नः

षोडशदण्डे पूर्वदिशायां 'कोवा कोवा' ध्वनिं यदा रटति काकस्तदा मित्रलाभं कथयति ॥ १६ ॥

दिन सोलह दण्ड समयमें जो पूर्वदिशामें यदि काक 'कोवा कोवा' शब्द करे तो उस रोज उस आदमीको अकस्मात् मित्रकी भेंट होगी।

सप्तदशप्रश्नः

दिवा सप्तदशे दण्डे दक्षिणदिशायां 'आय आय' शब्दं यदा रटति काकस्तदा महद्दुःखं कथयति ॥ १७ ॥

दिन सत्रह दण्ड समयमें जो काक दक्षिणदिशामें

'आय आय' शब्द करे तो उस रोज उस बस्तीमें सबको निश्चय महादुःख उपस्थित होगा ।

अष्टादशप्रश्नः

वायुकोणे अष्टादशदण्डे 'खावा खावा' ध्वनिं यदा रटति काकस्तदा महत्कार्य्यलाभं कथयति ॥ १८ ॥

अठारह दण्ड समयमें यदि वायुकोणमें काक 'खावा खावा' शब्द करे तो उस रोज अकस्मात् उत्तम कार्य उपस्थित होकर लाभ होगा ।

एकोनविंशतितमप्रश्नः

पूर्वदिशायामेकोनविंशतिदण्डे 'महा महा' ध्वनिं यदा रटति काकस्तदा विदेशगमनं कथयति ॥ १९ ॥

दिन उन्नीस दण्ड समयमें जो पश्चिम दिशामें काक 'महा महा' शब्द करे तो उस बस्तीके स्वामीको विदेश गमन करना होगा ।

विंशतिप्रश्नः

विंशतिदण्डे उत्तराभिमुखे 'अय अय' ध्वनिं यदा रटति काकस्तदा अर्थलाभ वार्त्तां कथयति ॥ २० ॥

दिनवीस दण्ड समयमें यदि उत्तर दिशामें काक 'अय अय' ध्वनि करे तो उस रोज अर्थ लाभ होगा।

एकविंशतिप्रश्नः

एकविंशतिदण्डे ब्रह्मस्थाने 'सा सा' ध्वनिं यदा उर्ध्वगो रटति काकस्तदा भूमिलाभं कथयति ॥ २१ ॥

दिन इक्कीस दण्ड समयमें यदि काक ऊर्ध्वस्थित होके 'सा सा' शब्द करे तो उस करके मनुष्यको उस रोज भूमिलाभ होगा।

द्वाविंशतिप्रश्नः

'आका आका' शब्दं द्वाविंशतिदण्डे पूर्व-

दिशायां यदा रटति काकस्तदाऽपूर्ववस्तु-
लाभं कथयति ॥ २२ ॥

दिन बाईस दंड समयमें जो पूर्व दिशामें काक 'आका आका' शब्द करे तो उस मनुष्यको अपूर्व वस्तुलाभ होगा ॥

त्रयोविंशतिप्रश्नः

त्रयोविंशतिदण्डे अग्निकोणे 'अद्दयं अद्दयं'
शब्दं यदा रटति काकस्तदा सर्वलाभं
कथयति ॥ २३ ॥

दिन तेईस दण्ड समयमें यदि काक अग्निकोणसे 'अद्दयं अद्दयं' शब्द करे तो उस रोज उस गृहस्वामीको सब प्रकार ऐश्वर्यलाभ होगा ।

चतुर्विंशतिप्रश्नः

चतुर्विंशतिदण्डे दक्षिणदिशायां 'ओवा
ओवा' शब्दं यदा रटति काकस्तदा अका-
लचक्रं कथयति ॥ २४ ॥

दिन चौबीस दण्डसमयमें जो दक्षिण दिशासे काक 'ओवा ओवा' शब्द करे तो अकस्मात् अकाल चक्रसे दश जन एकदिल होकेचक्रांत करके अपमानग्रस्त करे।

पञ्चविंशतिप्रश्नः

पञ्चविंशतिदण्डे नैर्ऋतिकोणे 'खाये खाये' शब्दं यदा रटति काकस्तदा सर्पभयं कथयति ॥ २५ ॥

दिन पचीस दण्ड समयमें जो नैर्ऋत कोणमें काक 'खाये खाये शब्द करे तो उस घरके कोई मनुष्यको साप डसेगा, वह मर जायगा।

षड्विंशतिप्रश्नः

षड्विंशति दण्डे पश्चिमदिशायां 'आहा आहा' रवं यदा रटति काकस्तदा सर्वत्र लाभं कथयति ॥ २६ ॥

छब्बीस दण्ड समयमें जो पश्चिमदिशामें काक 'आहा आहा' शब्द करे तो उस मनुष्यको उस रोज सब जगह लाभ होगा ।

सप्तविंशतिप्रश्नः

सप्तविंशतिदण्डे उत्तरदिशि आका आका' ध्वनिं यदा रटति काकस्तदा महत्सुखलाभ-वार्त्तां कथयति ॥ २७ ॥

सत्ताईस दंड समयमें यदि उत्तर दिशामें काक 'आका आका' शब्द करे तो उस मकानके मनुष्यको उस रोज महासुख होगा ।

अष्टाविंशतिप्रश्नः

अष्टाविंशतिदण्डे ऐशान्यां'सा सा' ध्वनिं यदा रटति काकस्तदा मनःकामनासिद्धिं कथयति ॥ २८ ॥

अठ्ठाईस दंड समयमें जो ईशानकोणमें काक 'सा सा' शब्द करे तो उस रोज उस मकानके मनुष्योंकी मनकामना पूर्ण होगी ।

एकोनत्रिंशत्प्रश्नः

'आखा आखा' रवमेकोनत्रिंशद्दण्डसमये ब्रह्मस्थानेयदारटतिकाकस्तदा सुखवार्ता कथयति ॥ २९ ॥

दिवा उनतीस दंड समयमें जो ब्रह्मस्थानमें अर्थात् मस्तकके ऊपर ऊर्ध्वस्थित होके यदि काक 'आखा आखा' शब्द करे तो उस रोज उस मनुष्यका बहुत सुखसे दिन कटेगा ।

त्रिंशत्प्रश्नः

'आवा आवा' रवं त्रिंशद्दण्डेभूमौरटति यदा काकस्तदा दुःखवार्ताकथयति ॥३०॥

तीस दण्ड समयमें भूमिमें बैठके यदि काक 'आवा आवा' शब्द करे तो उस रोज उस घरके मनुष्यको निश्चय महादुःखवार्ता प्राप्त होगी ।

पुनर्व्यक्तम्

काक जो बोले अपने मने। छाया मापिके

कीजे दुगुने ॥ सप्त भागसे बाकी जोई ।
बोले काक प्रमाण है सोई ॥ ३१ ॥

काक यदि अपने मतलबसे बोले तो जितने दंड समयमें बोले उसी समयकी छाया अंगुलीसे माप करके जितने अंगुल छाया मिलै ताको द्विगुण कीजै द्विगुण जितना होगा उसको सातसे भाग करके जितने अंक बाकी रहेंगे ताको विचार है कि "एक रहै तौ भोजनकारी । दूसर लब्धि जीव संचारी ॥ तीजै मृत्यु यात्रा पावै । चौथी कलह आग जलावै ॥ पांचसे मंगल यात्रा कहै । शून्य और छहसे निष्फल कहे ॥

सातअंगुलिपरिमितच्छायाद्विगुणीकृता ।

सातअंगुल प्रमाणसे एकतिनका खड़ा करके जोछाया होय उस छायाको मापके उसको द्विगुण करे जो अंकउसके संग मिले उनको सातसे भाग देवे जो बाकी रहे उसमें फलाफल यह कि; एकसे भोजन मिले, दो मिले तो उस नगरमें कोई जीव पैदा होय, तीन मिले

तो किसीकी मृत्यु होगी, चार मिले तो बड़ा उपद्रव मचेगा अथवा अग्नि भय होगा, पांज मिले तो किसी जगहसे शुभसंवाद आवेगा और छः वा शून्य मिले तो जानना होगा कि काक अपनी भाषा बोलता है ॥

इति काकचरित्र सम्पूर्णम्

दिवादण्डप्रमाणम् ।

दिनं खरामाद ३० धिकं यदल्पं रसेन ६
पंक्त्या १० निहतं शराप्तम् ॥ हीनं धनं दे-
शपलप्रभायां छाया च सा स्याद्दिनमध्य-
भागे॥छाया निजेष्टा दिनमध्यभागच्छायो-
निता दिक्सहिता तयाप्तं ॥ दिवा शरघ्ने
गतगम्यनाडी श्रीमान् वराहो वदति स्म
युक्त्या ॥

दिगमान यदि तीस दंडसे ज्यादा होय तो जितना दंड ज्यादा होय उस दण्डको छःसे गुणा करके पांचसे भाग करना होगा। हरण करके जितना होय सो अंक स्वदेशकी पलभामें हीन करै तब मध्याह्न कालकी छाया होवे और ३० दंडसे यदि दिनमान हीन होय तो जितना दंड हीन होगा सोई दंडको १० से गुणा करना, और पांचसे भाग करना भाग करके जितना अंक पाया जाय उसी अंकको स्वदेशकी पलभामें योग करनेसे दिनकी मध्य छाया होगी जितने समयमें इष्ट घड़ी जाननी होय उसे द्वादशांगुली शंकुकी छाया करके जितने अंगुलकी होय उनको सर्व लाई हुई मध्य छायासे हीन करके जो अंक बाकी रहे उसमेंऔर दश जोड़ करके एक स्थानमें रखना होगा और दिनमान जितना होगा उसको पांचसे गुणा करना आगे जो अंक रक्खा है उसी अंकसे इस अंकको हरे, हरनेसे वेलाका परिणाम पाया जायगा, अर्थात् सो अंक हरनेसे जितना हो सो दण्ड होगा और होनेसे

बाकी जो रहेगी सोई फल होगा । प्रातःकालसे दो पहर तक यही रूप जानो और दोपहरके परे जितने बेला है सोभी उसी तौरसे जानी जायगी इति ।

रात्रिदण्डप्रमाणम् ।

अतौश श्रीपंचनव त्रयोदश कपोदि नष्टकं
कपभूश्चतुर्दश। च योति सार्द्धशिवरात्रिपं-
चकं टीसौ चतुराष्टयाविष्णु षोडशम् ॥

प्रश्नकर्ता जितनी रात्रिमें प्रश्न करे, वही समय यदि रात्रिका निरूपण न पाया जाय तो जो मनुष्य प्रश्न करे उसको एक फूलका नाम लेनेको बोला उस फूलके नामका आदि अक्षर यदि असे किंवा त आदित कके नौ अक्षर आदि होयँ तो रात्रि अनुमान ५ दण्ड वा ९ दण्ड वा १३ दण्ड होगा एक और आदि अक्षर ङ से म तक, यदि वो नौ अक्षर आदि होय, दो छह, चौदह दण्ड रात्रि जानोगे और च आदि रतकत्र क्षत्रि

तक. दो ग्यारह बारह दंड रात्रि जानोगे ट से स तक यदि आदिके नौ अक्षर होयँ तो चौदह आठ सोलह दंड रात्रि जानोगे इति ॥

स्पन्दनचरित्रम् ।

अर्थात्–

आदमीका अंग फरके उसका विचार

अङ्गस्फूर्तिं प्रवक्ष्यामि यथैव मुनिभाषिताम्। फलाफलं विदित्वा तु वदाम्यत्र शुभाशुभम् ॥ १ ॥

शरीरके फरफरानेमें प्रत्येक अङ्गका जो फल है सो प्रकाश करके कहते हैं "जो जो अंग फरकता है उसका फल प्रकाश करके कहते हैं–" स्पन्दन शब्दका अर्थ मनुष्यका अंग फरकना है उसका फल-शिर फरके तो राजा सम्मान करे, शिरसे दाहिनी शिरा फरके तो सुख लाभ होय, वाम शिरा फरकनेसे भला होय,

ललाट फरकनेसे ऐश्वर्य्यलाभ होय, दाहिने नेत्र फरकनेसे धनलाभ होय अथवा मित्रमिलन होय, वामनेत्र फरकनेसे धनहानि होय अथवा राजभय होय किंवा कुछ उत्पात उपस्थित होयः दाहिने नेत्र नीचे फरकनेसे कष्ट होय, ऊपर फरकनेसे सुखयुक्त होय, वामनासा फरकनेसे मृत्यु होय अथवा तत्तुल्य रोग होय, दाहिनी नासा फरकनेसे शरीर पीड़ायुक्त होय, ओष्ठ फरकनेसे भला भोजन मिले, अधर फरकनेसे अकस्मात् पीडा युक्त होय और बंधन भय, दांत फरकनेसे मीठा भोजन मिले जिह्वा फरकनेसे बहुत लाभ होय, तालु फरकनेसे बहुत लाभ परंतु कलह उपस्थित होय, दहिना कान फरकनेसे कुटुम्बलाभ होय और सुन्दर स्त्री मिले, वामकर्ण फरकनेसे शिर पीड़ा होय, दोनों कर्ण फरकनेसे धनलाभ और संतोष होय, दाहिना कांध फरकनेसे सुवर्ण लाभ होय वामकांध फरकनेसे किञ्चित् आगमन करने होय, उभय कांधे फरकनेसे शिरश्छेदन होय,

शीश फरकनेसे वस्त्रलाभ और संतोषयुक्त होय. दाहिना भुज फरकनेसे महाबलयुक्त होय वाम भुज फरकनेसे कलह होय, दाहिना पद फरकनेसे दूरदेश गमन होय, वामपद फरकनेसे महा सुख होय. उदर फरकनेसे पुत्र उत्पत्ति होय. अंगुली फरकनेसे तीता भोजन मिले कमर फरकनेसे आमरोग होय. ललाट फरकनेसे राज-द्वारपर गमन होय, भग फरकनेसे पीड़ा होय. वक्षस्थल फरकनेसे सर्वांगमें पीड़ा होय पीठ फरकनेसे शूलरोग होय. नाभिसे फरकने दुःस्वप्न देखे, ऊरु फरकनेसे सर्वत्र जय होय और कुशलयुक्त होव,मलद्वार फरकनेसे शिरच्छेदन होय. कंठ फरकनेसे ज्वरातिसार रोग होय. स्तन फरकनेसे अर्थलाभ होय, केश फरकनेसे केशक्षय होय, नितंब फरकनेसे गात्रवेदना होय, पुनः शिर फरकनेसे विद्यालाभ होय इस तौरसे अंग फरकनेका फलाफल मुनिगण कह गये हैं. मनुष्यको चाहिये कि, सावधानीसे विचार करके फल मालूम करके मन-चिन्ता दूर करे।

सुप्रसवमन्त्र

अस्ति गोदावरीतीरे जम्भलानाम राक्षसी । तस्याः स्मरणमात्रेण विशल्या गर्भिणी भवेत् ॥

यह मन्त्र पढ़े और उक्त मन्त्र लिखकर औरतोंके गलेमें बांध देनेसे उसी वक्त गार्भिणी औरत पीड़ारहित होवे और यह चलीश घर पानीमें धोय उस पानीके पीनेसे उसी वक्त गार्भिणी सुखसे प्रसूत होवेगी ।

रामचरित्रम्

राम	सीता	लक्ष्मण
भरत	शत्रुघ्न	हनुमान्

४	१०	९
८	५	६
११	३	१३

प्रश्न

राम राज सुख सेज विलासा ।
सीता सोच करैं बनवासा ॥
लक्ष्मण लक्ष जीति घर आवे ।
हनुमत आगे खबरि जनावे ॥
भरतके देखत होत अनन्दा ।
देखि रिपुहन तरकश कंधा ॥
चारि औ दशपुनि आगमआवे ।
आठ पांच फल मांगे पावे ॥
तीन औ ग्यारहसे ले राजू ।
नव छः तेरह करैं अकाजू ॥

गर्भप्रश्न

रवि	चन्द्र	कुज
बुध	गुरु	शुक्र
०	शनि	०

रवि गुरु मंगल सुत उत्पन्ना ।

सोम शुक्र बुध जानो कन्या ॥
शनि का गर्भगलित करि डारी ॥
कहैं व्यास यह प्रश्न विचारी ॥

जो किसीको गर्भकी परीक्षा कन्या वा पुत्र जाननेका मतलब होय तो इस चक्रमें करप्रदान करके अक्षरको देखके विचार करे, इस तौरसे रवि मंगल बृहस्पति इन तीनों कोठोंमें यदि कर पड़े तो निश्चय पुत्र पैदा होगा सोम बुध शुक्रके कोठेमें यदि कर पड़े तो कन्या उत्पन्न हो और शनिके कोठेमें यदि कर पड़े तो गर्भ स्खलित हो जायगा, ये महामुनि व्यासके वचन निश्चय जानियेगा।

समाप्त

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास

६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो

श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास

चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

